Chandi Charitra

.... 4. ਤਹਿਸੀਲ ਨਾਭਾ ।

4. (ੲ) ਕਰਜ਼ਦਾਰ ਦੀ ਸ੍ਰੇਣੀ
ਛੋਟਾ ਕਿਸਾਨ/ਸੀਮਾਂਤ ਕਿਸਾਨ/
ਦੂਜੇ ਕਿਸਾਨ/ਅਨੁਸੂਚਤਿ ਜਾਤੀ/
ਅਨੁਸੂਚਿਤ ਕਬੀਲਾ/ਹੋਰ ।

ਾਂ ਦਾ ਵੇਰਵਾ :

ਤਵ	ਵੰਡਣ ਦੀ ਮਿਤੀ	ਦਿੱਤੀ ਹੋਈ ਰਕਮ

ਪਤੀ ਦਾ ਵੇਰਵਾ
ਲਈ)

ਲ	ਮੰਗ	ਵਸੂਲੀ	ਕਰਜ਼ੇ ਦਾ ਬਕਾਇਆ

श्रीदुर्गादेव्यै नमोनमः।



चण्डी-चरित्र

प्रथम अध्याय



कवित्त।

सुन्दर रदन एक श्रीजूको सदन।
शुभ सिंदुर बदन शारदासुछबि छायो है॥
सिद्धिके अयन शशिसूर्यसे नयन।
शुंडामंडलसुमंडित शिवाके मन भायो है॥
नाम ही के लेत देत सृष्टिको अभीष्ट फल।
जाको निगमागमने नेति नेति गायो है॥
चण्डिके चरित्र कहिवेको विप्र भैरवने।
सोई वरदायक विनायक मनायो है॥ १॥
व्यासदेवजीके शिष्य जैमिनीने बूझी।
तपोधन महामुनि मार्कंडेयने भाषी है॥

मेधावीने कही राजा सुरथसों वनमाहिं ।
वहीं समाधि वैश्यने सुधाकी सम चाखी है ॥
जोई कथा सूतने प्रकाशी सौनकादिकोंसों ।
शाखी निगमागम जगत् अभिलाषी है ॥
भैरवने सोई नरभाषामें विचित्र ।
महामायाके चरित्रमें पवित्र कर राखी है ॥ २ ॥

कुण्डलिया ।

वरणी वेद पुराणमें भो जैमिनि मुनिमित्र ।
ऋषि मृकंडके पुत्र यों बोले कथापवित्र ॥
बोले कथा पवित्र सुरथ राजा अम्वरणी ।
सुन तिसकी उत्पत्ति सकल कलिकल्मषहरणी ॥
जगदम्वाने कृपा करी ऐसी कुछ करणी ।
भया सूर्यको तनय आठवां मनु सावरणी ॥ ३ ॥
स्वारोचिषके राज्यमें चैत्रवंशकी टेक ।
सुरथ नाम राजा भयो क्षितिमंडलमें एक ॥
भूमंडलको राज प्रजाको पालत ऐसे ।
उरते उपजे देख पिता पुत्रनको जैसे ॥
लोक लोकमें कीर्त्ति फिरै जाकी कलहंसी ।
भये शत्रु तिहि काल भूप कौलाविध्वंसी ॥
प्रबलदंड बल मंड नृप जुटो युद्ध जाको सुयश ।
लघु शत्रुनतें सुरथको भयो पराभव कर्मवश ॥४॥

सवैया ।

पुन आय धस्यो अपने पुरमें निज देशको भूपति भूप भयो । सुन शत्रुनके सैन्य समूहोंने धाय तहां वड़भागी को घेर लयो ॥ बल भेदके कोश कियो निज तंत्र कुमंत्रियोंने नृप छांड़ दयो । मृगया मिस हो हय पै असवार असंग अरण्यके पंथ गयो ॥ ५ ॥ शुभ देखो ऋषीश

सुमेधाको आश्रम सुन्दर सिद्धि समृद्धि यहां रहें फूले फले तरु गुल्म लता सब श्वापद सिंहके क्रोध कहां ॥ मधुर ध्वनि वेदके पाठ पढ़ें बहु शिष्य अलंकृत बैठे जहां । मुनि ने बनमें सत्कार कियो कछु काल बसे नृपनाथ तहां ॥ ६ ॥ मुनिवर्यकी आश्रम संपत्ति पेखके मोहित यां वां फिरे भ्रमता। गृह कोश पुरी गजवाजिको चिंतत राज्यमें पूर रही ममता ॥ इक वैश्यको देखके बूझ उठ्यो किंह कारण आयो यहां रमता । कह को तू सशोक सो भासत है मेरे शोच की धारों फिरै समता ॥ ७ ॥ भूपसों बोलों मैं जातिको वैश्य हूं नाम समाधि हूं दुःख घनेरो । आढ्यके वंशमें संभव पायके संचित द्रव्य कियो बहुतेरो ॥ लोभतें पुत्रकलत्रने काढ़ दियो बन छीन लियो धन मेरो । जीवत हैं कि मरे यह शोच ज्यौं कुष्टमें खाज ममत्वने घेरो ॥८॥ किसको पति कैसो पिता किहँ कामको क्यों कर खायगो है किनमें । कहै पुत्र कलत्रने काढ़ दियो फिर क्यों तू सनेह करै विनमें ॥ नृपनंदन ऐसे हो है तो सही मनको दृढ़ ना पहुंचै छिनमें । किहं कारण जानत ना मेरी क्यों दिन रात रहै ममता तिनमें ॥ ९ ॥ वां से समाधिको साथ लिया अवनीश सुमेधाके सन्निधि आया । कीने प्रणाम यथोचित्त बैठके आदितें आपनो दुःख सुनाया ॥ ज्यौं गत राज्यको शोचत मैं इन वैश्यने द्रव्य विषय मन लाया । अग्निके दाझेको अग्निमें कौन ममत्व को कारण भो मुनिराया ॥ १० ॥ बोले मुनीश विषयको तो ज्ञान नरेश सुनो पशु पक्षीको जैसो । पुत्रोंको लालन पालन पोषण तोषण तुल्य मनुष्यको तैसो ॥ लोभतें प्रत्युपकार के अर्थ अनर्थमें व्यर्थ रहो फँस कैसो । मोहके गर्त्तमें डारो है जीव जगज्जननीको प्रभाव है ऐसो ॥ ११ ॥

तातें करे मत विस्मय तू जगदीशके योगकी मानिये माया। विद्या सनातनि सो परमासव सृष्टिको कारण वेदोंने गाया ॥ ज्ञानियोंके तिन चित्तको खेंचके मोहमें बांधके विश्व भुलाया। भैरव भक्त पै होय प्रसन्न तो मुक्तिकी मुक्ति की है वरदाया ॥ १२ ॥ भगवन् वह कौनसी देवी कहो भगवन्तकी माया कहावे यथा। सव आदि अनादि की जानत हो तुमने निगमागम-सिंधु मथा ॥ तिसको कैसो प्रादुर्भाव भयो शुभरूप स्वभाव प्रभाव तथा ॥ हमको भी करो कृतकृत्य पवित्र सुनाओ विचित्रचरित्र कथा ॥ १३ ॥ ऋषि बोले सो नित्या है सत्या सदा सकला जगती जाकी मूर्त्तिमई। जाको संभव संभव नाहिं कछू और है बहुधा मन मान लई ॥ सुर भक्तोंके कार्य की सिद्धिके अर्थ ज्यौं सादर प्रादुर भाव भई ॥ नृप तीनहु लोकमें तीनहु कालमें ताकी कथा सुन नित्य नई ॥ १४ ॥ कल्पके अंत अनंत की तल्प पै पौढ़ रहे भगवंत विचक्षण। विष्णुके कर्णके मैलतै भीषण दैत्य भये मधु कैटभ तत्क्षण ॥ नाभिके पद्ममें बैठे विरंचिको धाये कृतोद्यम मानके भक्षण। भैरव ब्रह्माने तुष्ट करी कह्यो हे योगमाय करो मम रक्षण ॥ १५ ॥ देखत हूं थल ना जल ही जल पूरव पश्चिम उत्तर दक्षण। भैरव शेषकी शय्या पै श्रीपति सोवत हैं सुख सिन्धुमें सक्षण ॥ ईशके नेत्रोंमें बैठीं कहा दोऊ दैत्य उठे भये मत्युके लक्षण। ध्यान लगाय करूं स्तुति तेरी तू हे योगनिद्रे करो मम रक्षण ॥ १६ ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द।

तुही आप विश्वेश्वरी विश्वधातृ।
जगन्मूर्त्ति तुही है जगतातमातृ ॥
तुही सृष्टि संसार संहारकर्तृ ।

सदा भक्तके दुःखदारिद्रहर्तृ ॥ १ ॥
तुही विष्णुकी योगनिद्रा कहाई ।
तुही ब्रह्मविद्यात्मिका वेदगाई ॥
तुही यज्ञमें देवतुष्टी अनूपा ।
तुही श्राद्धमें पित्रतृप्तिस्वरूपा ॥ २ ॥
तुही सर्ववर्णावली है विचित्रा ।
तुही अक्षरा है सुधा सी पवित्रा ॥
तुही एकमात्रा द्विमात्रा त्रिमात्रा ।
तुही अर्द्धमात्रा तुही लोकयात्रा ॥ ३ ॥
दिवा रात्रि संध्या तुही काललीला ।
सवित्री तुही पुष्टिदा तुष्टिशीला ॥
तुही शब्दके सिंधुमें शुद्ध सेतु ।
तुही सृष्टिसर्गस्थितिध्वंसहेतु ॥ ४ ॥
तुही उग्रविद्या तुही दीर्घमाया ।
तुही उग्रमेधा स्मृति ज्ञान गाया ॥
महामोहरूपा महादेवि तू है ।
महाईश्वरी सर्वदा सिद्ध तू है ॥ ५ ॥
प्रकृत्यात्मिका तू गुणव्यक्तिमूला ।
तुही कालरात्री है रुद्रानुकूला ॥
महारात्रि तू है तुही मोहरात्री ।
तुही भीमरूपा तुही भव्यगात्री ॥ ६ ॥
तुही श्रीश्वरी बुद्धि लज्जा निरुक्ता ।
तुही शांति है शांतिदा नित्यमुक्ता ॥
तुही खड्गनी शूलिनी रूपघोरा ।
गदाधारिणी चक्रणी तू कठोरा ॥ ७ ॥
तुही शंखनी चापनी बाणहस्ता ।
भुशंडीधरा पर्घिनी तू समस्ता ॥

तुही आप सौम्या तुही सौम्यता है ।
तुही सर्वमें सर्व तोमें मता है ॥ ८ ॥
तुही युद्धमें शत्रुको कर्षिणी है ।
कृपादृष्टिपीयूषकी बर्षिणी है ॥ ९ ॥
तुही विश्वमें सर्वसे सुंदरी है ।
तुही सर्वमें शक्ति निश्चय करी है ॥
तुम्हीसे भये लब्ध निद्रा मुरारी ।
लसत्पद्मशंखी गदा-चक्रधारी ॥ १० ॥
तुही विष्णु ब्रह्मा महारुद्र तीनों ।
अजन्मा धरैं जन्म तो तैं नवीनों ॥
तुही आदि है मध्य है अन्त मासे ।
तुही आदि मध्यान्तहीना सदासे ॥ ११ ॥
अशेषा गिरी पै कही तू न जाई ।
कहै कौन संपूर्ण तेरी बड़ाई ॥
तुही है तुही है तुही है समस्ते ।
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ १२ ॥

सवैया ।

तोमें प्रभाव अनन्त भरे मैं कहां लो कहूं वे कहे नहीं जाहीं । दैत्यों को रोध के विष्णु को बोधो वधो मधुकैटभ को छिन माहीं ॥ भैरवदास को शोचके सिन्धुतें काढो कृपा करके गह बाहीं । हे योगमाये तेरे गुण गाये हतो तुझको कछु दुर्लभ नाहीं ॥ १ ॥ सुनती सुनती विधिकी बिनती हरिके युगलोचनतै मुख धाई । मुखते फिर नासिका नासिकातै भुजदण्डोंमें भेट भई अगुराई॥भुज-दण्डोंसे जायँ हृदयमें हृदयसे उरस्थलको लंघ बाहर आई। लख भैरव ब्रह्मा कृतार्थ कियो निज मूर्त्ति दिखाय दई प्रभुताई ॥ २ ॥ निजनिद्रा सों मुक्त भये करुणाकर

केवल कीर्त्ति प्रकाशनको । जलमें दोऊ दारुण दैत्य लखे गरजै तरजै कमलासनको ॥ हरि भैरवदासके संकटमें अकुलाय उठे तज आसनको । भये क्रुद्ध कियो भुजयुद्ध चतुर्भुजने मधुकैटभ नाशनको ॥ ३ ॥ लिपटे मधुसूदन सों मधुकैटभ छांड़ दियो पद्मासनको । कर ठोकर मुष्टिन सों धरषै बरषै मुख वाय हुताशन को ॥ अलटे पलटे झटके पटके न गह्यो हरि चक्र शरासन को । भुजयुद्धमें वत्सर पंचसहस्र वितीत भये गरुड़ासन को ॥ ४ ॥ खल कोप भरे न मरे न टरे न डरे प्रभु विष्णु हटे कितना । लियो खैंच तभी महामायाने ज्ञान जो था मधुकैटभमें तितना ॥ गई बुद्धि विरुद्धमें बोल उठे वर मांग तू चाहत है जितना । हरिने यह मांगो हनूं तुमको जो प्रसन्न भये तो करो इतना ॥५॥ भये वंचित बोल उठे हरिसों प्रलयार्णव देख कहूं थल ना । तुमते वर मृत्यु वधो हम को मधुसूदन होहु जहां जल ना ॥ कहै शीघ्र तथास्तु गदाधरने कर चक्र फिराय करी कल ना । धर जंघा पै यों मधुकैटभके किये खंडन मुंड लगी पल ना ॥ ६ ॥ चतुराननने जब तुष्ट करी तब यों उत्पत्ति भई तिसकी । मिल भैरव श्रीमधुसूदनसों विधि गावत कीर्त्ति अभों जिस की ॥ ख मरु ज्वल नां बुध रा सृजके जिन सृष्टि रची है दशों दिश की । नृप पालत ताहि जगज्जननी सुन और प्रभाव कथा इसकी ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

तोटक छन्द ॥

अमृतध्वनि अर्थसमूह भरा । पढतोहि अभिष्टफलप्रकरा यह भैरवनाथ कथा कहली । मधुकैटभ के वधकी पहली

प्रथम अध्याय समाप्त

द्वितीय अध्याय

सवैया ॥

शतवर्ष सुरासुर दारुण युद्ध भयो पहलै यह बात सुनी । बल गर्वित दानव दैत्य लडे सब मारके शक्र की सैन्य धुनी ॥ रणखेती परास्त पुरंदरको किया, नन्दनबाग की शाख लुनी । महिषासुर इन्द्र भयो नृपसे कह्यो भैरवनाथ प्रसन्न मुनी ॥ १ ॥ रणतें सब देव बहिर्मुख हो घर जाय चतुर्मुख साथ लये । वृषभध्वज सों मिल भैरव श्रीगरुड़ध्वजके पुन पास गये ॥ कर वन्दन बोल उठे हमको दल दैत्योंने दारुण दुःख दये । महिषासुर आप सुरेंद्र भयो दोय मृत्य किये शशि सूर्य नये ॥ २ ॥ वरुणानल वायु हुताशन के सबके अधिकार लिये हरकै । दिये स्वर्गसों काढ़ महीतलमें हम दीनसे दीन लुकैं डरकै शरणागत ये सुरवृंद खड़े हरि पालहु चक्र गदा धर कै। महिषासुर दुष्टको नष्ट लखें चितवो सो विचार कृपा करके ॥ ३ ॥ सुरवृंद की दीन गिरा सुनके मधुसूदन कोप भरे मनमें । महारुद्रकी ऊर्द्ध, चढ़ी भृकुटी चतुरानन तप्त भये तनमें । तिन तीनहु देवनके मुखते निकस्यो तप तेज तिसी छनमें ॥ मिलकै सब भैरव एक भयो जैसे ज्वालमें ज्वाल महावनमें ॥ ४ ॥ सुरतेजको पुंज भयो इकठो लख भैरवनाथने ध्यान गहा । ऊर्ध्वशिखा जैसी शैल बले जाकी ज्वालसों दीप्त दिगंत रहा ॥ तिन तेजने कौतुक ऐसो कियो वह कौतुक कौन पै जात कहा । सब आप ही आपतें नारी भयो तिहू लोकमें सुन्दर रूप महा । शंभुको तेज भयो मुख मंडल केश भये यम तेजते कारे॥ विष्णुके तेजतें बाहुबलीकुच वर्तुल चन्द्रके तेज सुधारे। इन्द्रके तेजतें मध्य विराजत जंघ उरू दोऊ वारुणवारे ।

भूमिको तेज नितंब लसैं पद भैरव ब्रह्माके तेज निहारे ६
अर्कके तेज तै चारु पदांगुलि वासव तेज करांगुलि जानी। नासा कुवेरको तेज प्रजापति तेज तै दंतकी पंक्ति पिछानी॥ पावकतेज त्रिलोचन भैरव संध्याके तेज तै भ्रू मनमानी। वायुके तेज तैं कर्ण भये सुरतेजको वैभव आप भवानी॥ ७॥ तदनन्तर भैरव देवमयी जगदम्बा को देख प्रसन्न भये। निज शस्त्रोंसे शस्त्र निकासके भेंट किये सुर होयकै मोदमये॥ करशूलीने शूल सुचक्री ने चक्र प्रचेताने पाश सो शङ्ख दये। दई शक्ति हुताशन ने लख मारुतने शर चाप निषङ्ग नये॥ ८॥ इन्द्रने वज्र तै वज्र दियो निजवाहन घंटे तै घंटा महाधुन॥ अर्पण दंड कियो यमरायने अक्षकी माला प्रजापतिने पुन। ब्रह्माने दीनो कमंडलु सूर्यने रोमोंमें आपनी रश्मिदई चुन॥ कालने निर्मल खड्ग सचर्म दियो महामायाको भैरव सो सुन॥ ६॥ क्षीर समुद्रने मौक्तिक हार नवांवर निर्जर नित्यनवीने। मौलिकी दिव्यमणी शशिखंड सुकानोंके कुण्डल कंकण दीने॥ बाहोंमें रत्नों के अंगद पांवमें भैरव रत्नके नूपुर कीने॥ ग्रीवाको भूषण अंगुली भूषण रत्नमयी किये रत्न अधीने॥ १०॥

कबित्त।

शीस उर पर पद्म माला पहरायकर,
कंज देता भया जलनिधि गुण गावता।
सौंप्यो विश्वकर्माने कुठार तीव्रधार,
अस्त्रबिबिध अभेद्य दिव्य कवच सुहावता॥
नानारत्न साजसिंह वाहन हिमाद्रिने,
धनेश पूर्ण पानपात्र भयो है चढ़ावता।
शेषने प्रसन्न होय महामणि भुजङ्गहार,

भेट कियौ भैरव शिवाके मनभावता ॥ ११ ॥
देके दिव्य अस्त्र शस्त्र भूषण सुवस्त्र,
देव ठाढे भये भैरव चमर छत्र ढोलने ।
देख सत्कार भई सिंह पै सवार,
भर कोप खड्ग शूल शक्ति लागी कर तोलने ॥
गरजो अकाश अट्टहास की प्रति ध्वनिसौं,
लगो घर घठ मठ वापी कूप बोलने ।
शंकित त्रिलोक भये कंपित समुद्र सात,
धरणी डुली लगे धरा धरेन्द्र डोलने ॥ १२ ॥
बोलें देव जयजय मुनिभये भक्तिमय,
भैरव शिवाको तुष्ट किया गुण गायके ।
होठ फड़ड़ करें दंत कड़ कड़,
देवी हँसे हड़ हड़ रह्यो व्योम घरड़ाय के ॥
होय मड़ मड़ प्रलय कीसी गड़ बड़,
सुन साज साज दैत्यदल उठे ववकाय के ।
कैसी अड़ अड़ ऐसे कह्यो महिषासुरने,
शब्द सन्मुख चलो दड़ बड़ वायकै ॥ १३ ॥
भैरव सुरूप देख्यो धायकै शिवाको,
शत कोटि शशिसूर्यसेतो अधिक प्रकाशमैं ।
फिर महामायाने जो देखा महिषासुरको,
पांव तो पताल मौलिमुकुट अकाशमें ॥
फैल रहीं जाकी दिश दिशमें सहस्त्रभुज,
धनुषकी ध्वनि सुन भूमितल त्रासमें ।
जैसे महाकालके कराल प्रेत संग ऐसे,
दैत्यदल तुंग दौडे आवें आस पासमें ॥ १४ ॥

सवैया ।

सेनापति महिषासुरके चतुरंग ले चितुर चामर आये ।
साठ सहस्र रथी जिसके संग नाम उदग्रने लोक हलाये ॥

कोटिरथी तो महाहनु के असिलोमा के पञ्चास लच्च बताये। वाष्कलके गज वाजी षडायुत सौगुणे वैरथ।कोटि सजाये॥ दैत्य बिड़ालके पंचाशतायुत साथ रथो जिन देव डराये। पद्मो गजाधिप पद्मो हयाधिप पद्मो रथाधिप गर्वमें छाये॥ और किते अयुतो नियुतो प्रयुतो महिषासरके भट गाये। उद्यत शस्त्रोंसे क्रुद्धित हो महामायाके सन्मुख युद्धको धाये॥ १६॥

स्रग्विणी छन्द

धायके अस्त्र छोड़े भरे क्रुद्धमें,
शस्त्र लेले चलावें जुटे युद्धमें।
तोमरों भिंडपालों लड़ें हर्षते,
मुगदरों मूशलों पट्टिसों घर्षते॥ १॥
खड्गसों खंडते पाशसों कर्षते,
शक्तिपै शक्तिवाणावली, घर्षते।
दर्शते रूपको हस्तको घर्षते,
वक्रको वावते रक्तको तर्षते॥ २॥
दैत्य दौड़े फिरें छिद्रको चिह्नते,
भल्लसों भिन्नते पशु सों छिन्नते।
मण्डलाकार लेके गदा धावते,
गर्जते तर्जते गर्व में छावते॥ ३॥
कालके दंडसों शूलसों वेधते,
इन्द्रके वज्रको चक्रसों छेदते।
चंडिका ने लखे पास आये जवें,
आपने शस्त्रसों शस्त्र काटे सवें॥ ४॥
देव दर्वार्षि बोले शिवे पाल त,
वेद गावें महाकालको काल तू।
कीर्त्तिलुब्धा लगी दृष्टिसंचारणै,
शत्रुके सैन्यको शीघ्र संहारणै॥ ५॥

कोप सेती चलत्पुच्छ ऊमी सटा,
सिंह गर्जो प्रलयकालकी सी घटा।
चक्र वायों फिरै दुष्टको लज्जता,
अग्निसा दैत्यकारण्यमें मज्जता ॥ ६ ॥
अंबिकाके सहस्त्रों छुटे श्वासजे,
हो गणाकार धाये सशस्त्रा सजे।
प्रास पैने पटे परशु की धारके,
मारके दैत्य केते दिये डारके ॥ ७ ॥
शक्ति की शक्तिसे वृद्धिको पावते,
अंबिकाकी महत्कीर्त्तिको गावते।
शत्रुकी वाहिनीको फिरैं तोड़ते,
शंख ढक्का मृदंगानिको घोरते ॥ ८ ॥
युद्ध उत्साहमें पूर्ण देखे गणा,
स्फूर्त्तिसे शस्त्रसपातकीने घणा।
शूर संग्राममें दैत्य कोटों कटे,
पेट फूटे खडे शीस सोहैं फटे ॥ ९ ॥
युद्धको देख देवी लगी हर्षणै,
आपने दिव्य शस्त्रास्त्रको वर्षणै।
ले त्रिशूला ग्रसो वेग वंधे हिये,
खड्गसों खंडके मुण्ड न्यारे किये ॥ १० ॥
शक्तिकी वृष्टिसों दुष्ट लक्षों हने,
रुष्ट पिष्टे गरिष्टा गदा तैं घने ॥
मोहि डारे किते शैलके काव्यसे,
चंद्रघण्टा ध्वनीतें मृतप्रायसे ॥ ११ ॥
पाशमें फांस डारे किते पौंस ;से,
मद्य पीकै यथा दीर्घ निद्रा ग्रसे।
मूशलों मुंड कूटे लखे झूमते।
रक्तकी वांति करते गिरे घूमते ॥ १२ ॥

शूलकी हूलसों धूलहीमें रले,
भूमिसाई भये भिन्नवक्षस्थले।
पातसे दैत्य वेधे शराघाततें,
छिद्र छिद्रांकिता होगये गाततैं॥ १३॥

नाराच छंद।

हने घने बलाग्रणी अखर्व गर्व मोहिता।
निकृत्तबाहुमस्तका समस्तरक्तलोहिता॥
किते कपोल कन्धरा कटिप्रदेशतें कटे।
सजंघ तुंड मुंड़ खंड युद्धमें पडे पटे॥१॥
किये अनेक एक बाहु चर्ण कर्ण लोचना।
करै सुरेश्वरी असह्य अस्त्रशस्त्र मोचना॥
उठे कबंध मुंड वांध युद्धको प्रवर्त्तते।
रणप्रवाध घोषतें फिरें कराल नर्त्तते॥ २॥
किते सशस्त्र धायके भुजा उठाय दाहनी।
कहैं प्रचंड दैत्य तिष्ठ तिष्ठ सिंहवाहनी॥
सुरेश्वरी फिरै गरिष्ट रुष्ट दुष्ट नाशती।
सशक्तिशूलचक्र चंद्रहासको प्रकाशती॥३॥
पड़े पहाड़ से रथी ससारथी गजा महा।
हते सुरारि दुर्गे मा धरा भई भयावहा॥
बही अनंत रक्तकी नदी तरङ्गशालिनी।
समेदमांसकर्दमा कपाल पद्ममालिनी॥४॥

सवैया॥

वरणे किन ये ये गणोंने हने जगदम्बाने प्रास किये क्षयमें
क्षण एकमें अग्निकी ज्वालासी पैठ यथा तृणतूलके संचयमें
धुत् केसर सिंहने शब्द कियो कितने गतप्राण भये भयसें
स्तुतिपूर्वक पुष्पोंकी वृष्टि करें सुर बोलत भैरव जय जयमें

तोटक छंद।

द्विज भैरवने अघकी हरणी। यह दूसरी युद्ध कथा वरणी
रणमें क्षणमें सुरकार्य सधा। इसमें महिषासुर सैन्यवधा

दूसरा अध्याय समाप्त॥

तृतीय अध्याय ।

सवैया ।

सुदित सैन्यको देखके देवीपै चिक्षुरसेनापति ललकारा ।
बाणों कि यौं वर्षें वर्षा घन मेरुके शृंगपै ज्यौं जलधारा ॥
छेदके सायक भेद धनुर्ध्वज अश्वोंको वेधके सारथी मारा।
वर्मको मर्मको तोड़ा शरोंने शिवाकी शरासन लीला अपारा।
छिन्नशरासन सारथी खिन्न हुए हैं भिन्न भयो रथहीना।
धाय सचर्म उठायकै खड्ग घुमायकै सिंहके शीसमें दीना ॥
भैरव देवोंके देखत देवीकी बांई भुजामें हनो दृढ़ कीना ।
टूटके प्रास गयो शतधा नृपनन्दन दुष्टकी आस फली ना २
टूट गयो करवाल हुए युगलोचन लाल ले शूल चलायो ।
देख्यो विभाकरविंवसोभासततेजकीराशिप्रकाशतें धायो
भैरव देवीके शूलने शूल कियो शतधा निज वेग दिखायो ।
चिक्षुरके वपुको बहुधा करके फिर देवीके हाथमें आयो ३
चिक्षुरको हत चामरने लख शक्ति चलायके सिंहुरहूला ।
हूं कृत भैरव शांभविको भयो शक्तिके भेदनको अनुकूला॥
क्रोधमें फूलके शूलनिपात कियो अपने अनुभावमें भूला ।
देवीने छेदके सायकोंसे किया दुष्टके शूलको धूल समूला ४
तत्क्षण कूद मृगेन्द्र महाबल जाय गजेन्द्रके कुंभोंपै वैसा ।
दोनों गिरे करते भुजयुद्ध महीतलमें न कहै कवि वैसा॥
भैरव देवीके सिंहने धायके दीनो कपालमें थप्पड़ ऐसा ।
वज्रका मारा ज्यौं शैलको शृङ्ग गयो उड़ चामरको शिरतैसा
अग्रणी देव उदग्रको देवीने पादप शैल शिलासों विनाशा।
दैत्य करालको एकही धौलमें मौलि उड्यो सुरदेखें तमाशा
तूर्ण गदासे कियो तन चूर्ण गई उठ उद्धत की निजआशा ।
बाणोंसे वेधके तामृक अंधक भेजदिये ये कृतांतके पासा ६

कवित्त ।

वाष्कलको आदि देके मारे भिंडपाल सेती,
रहे थे बहुत स्वर्ग भूतल हलावते ।
अग्रणी उग्रास्य उग्रवीर्य महाहनु तीनों,
भेदे हैं त्रिशूलसे त्रिलोचनीने धावते ॥
एक करवालमें विडालको कपाल काट्यो,
छेदे हैं अनेक गणनामें नहीं आवते ।
दुर्धरको दुर्मुखको वेधकै शिलीमुखों ते,
भेजे यमलोक को फिरे थे मुख वावते ॥ ७ ॥

सवैया ।

बल चीण लख्यो महिषासुरने अपनो तव माहिष रूप धरयो । धरकेभ्रमणे में गिरे कितने गण वेधे विषाणोंसे क्रोध भरयो॥खुर पुच्छ निपाततें तुंडकी घाततें श्वासकी बाततें सत्व हरयो । दिये गर्जते डार महीतलमें प्रमथों को महाभय त्रास करयो ॥८॥ गेर दियें रणमें गण धाय मृगेंद्रके मारवेको भयो धावता । खूंदता भूको खुरोंसे विषाणोंसे पादप शैलशिला वरसावता॥ श्वास समीरतें ऊँचे अकाशलों पातसे पर्वत पुंज उड़ावता । पुच्छप्रहार तें चोभितसिंधुके चीरतें तीरके अद्रिं रिलावता ॥ ९ ॥ देख्यो अकालप्रलय सों सबै करता उत्पात जबै ढिग आया । चण्डीने पाशमें फांस लिया घट श्वास घुटा तनमें अकुलाया॥ छाड़के माहिषरूप भयंकर सिंह भया गरजा मुख वाया । देवी करै इतनै शिर छिन्न भयो पुरुषाकृति अद्भुत माया ॥ १० ॥ धायो नराकृत ले असि चर्म शिवाने शरोंसे उरस्थल छेदा ॥ होके नरेन्द्रतें शीघ्र गजेंद्र मृगेंद्रको खैंचके दंतसों भेदा । देवीने खड्गसे शुंडसमेत कियो मुख खंडन मुंडन छेदा । फै तदनन्तर माहिषरूप लग्यो करने त्रई लोकको खेदा ॥ ११ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

लखा दैत्यको युद्धमें फूट योधा ।
हुई रक्तनेत्रारविंदा विरोधा ॥
पिबै दिव्य हाला लसै पानपात्रा ।
हंसै हास अट्टट्ट आटोपगात्रा ॥ १ ॥
उतै दैत्य बल दर्प नर्दै प्रहर्षै ।
शिवापै विषाणाग्रसे शैलवर्षै ॥
शरोंसे किये अद्रिसंचूर्ण तूर्णा ।
उठी बोला गद्गदगिरा क्रोधपूर्णा ॥ २ ॥
अरे नर्द ले नर्द दुष्टाभिमानी ।
पिऊँ पान यावत कहूं सत्यवानी ॥
करूँगी जुदे देहसे प्राण तेरे ।
फिरेंगे अभी हर्षते देव मेरे ॥ ३ ॥

सृग्विणी छंद ॥

बोलती बोलती दंतको चावकै ।
कूदकै पांव नीचै लिया दावकै ॥
अंघ्रिसे दुष्टकी पंसली तोड़कै ।
शूल सेती दिया कंठको फोड़कै ॥ १ ॥
दैत्य छूटा शरीरार्द्धकी आसतै ।
लोकलोकेश्वरीके पदन्यासतै ॥
वक्रसे अर्द्ध ऊभा हुआ वारको ।
स्फूर्त्ति करने लगा ढाल तलवारको ॥ २ ॥
देखके दुष्टकी दुष्करा दुर्धृति ।
तप्तताम्राक्षिणी हो कृतांताकृति ॥
कालदण्डांघ्रिसे रुण्डको कण्ड कै ।
मुंड कीनो पृथक् खड्गसों खण्डकै ॥ ३ ॥
दैत्य हाहा हता शब्द उच्चारते ।
शूलनी मे हने वे घने मारते ॥

चक्रकी देख चंचत्प्रभाज्वालको ।
शेष जे थे गये पैठ पातालको ॥ ४ ॥
पुष्प वर्षैं भरे देव आनंद से ।
शङ्करीको प्रसन्ना करें छंदसे ॥
दुंदुभी डौरू गर्जें बड़ी घोरसे ।
पाहि मां पाहि मां हो चहूं ओरसे ॥ ५ ॥
दिव्यगन्धर्व जे गानमें तत्परा ।
कीर्त्ति गावैं फिरैं नृत्यती अप्सरा ॥
उचरैं सिद्ध जय जय जगन्मङ्गले ।
भैरवानंद भाषै हमें संग ले ॥ ६ ॥

तोटक छन्द ।

कहली रमणीय तृतीय कथा। भई भैरवनाथ की बुद्धि यथा॥
द्विज भूषणसज्जन कर्णनकी। महिषासुरके वध वर्णनकी ७

तृतीय अध्याय समाप्त ।

चतुर्थ अध्याय ।

कवित्त ।

बोले ऋषि राजन्! सुरेश्वरीने दैत्यदल ।
दल मल प्रबल मिलाय धूरमें दये ॥
सिंहवाहिनीने जब मारथो महिषासुरको ।
लोक २ के अशेष शोक दूर होगये ॥
इन्द्रादिकदेव मग्न प्रेमके पयोनिधिमें ।
पुलकित हों गात गुण गायके नये नये ॥
भक्तभाग्यवर्द्धनीको भैरवकपर्द्दनीको ।
यों महिषमर्द्दनीको तुष्ट करते भये ॥ १ ॥
जाकी ज्योतिसेती जगमगत जगत् आप दीखै ।
आप परिपूरण निखिल नर नार में ॥

मूर्त्ति है सकल सुरशक्तिको समूह जाकी ।
भक्ति देत भुक्ति मुक्ति भक्तिकी पुकार में ॥
जाको पूजे सनक सनन्दन सनातनसे ।
सिद्ध भये भैरव मुनी है वेद चारमें ॥
ऐसी अंबिकाको हम करें हैं नमस्कार ।
सोई करो कुशल हमारे परवारमें ॥ २ ॥

सवैया ।

जाके अचित्य अनंत प्रभावको श्रीभगवंत बखानत कैसे ।
शेष सुरेश दिनेश न जानें महेश सुधी चतुरानन तैसे ॥
चंडी सो दुष्टोंको नष्ट करो तिनको न रहै भय रच्छक जैसे ।
भैरव विश्वके पालनको करती रहो बुद्धि मनोरथ ऐसे ॥
श्रीसुकृतीनके सद्मनिमें रहै दुष्टोंके मन्दिर मांहि अलच्छा ।
सज्जन संगमें श्रद्धा बुधोंमें सुबुद्धि यही तें भये कवि दच्छा॥
लज्जा लसै कुलवंतोंके कायमें तो विन जीव न भासत अच्छा
भैरव तोको प्रणाम करै तू जगज्जननी कर विश्वकी रच्छा ॥
हम कैसे करैं तेरे रूप अचिंत्यको वर्णन बुद्धि समर्थ नहीं।
असुरच्छयकारीजोतोमेंपराक्रम सो जगतीमें न देख्योकहीं॥
अरु जेजे चरित्र सुरासुरयुद्धमें अद्भुत कीने लखे सबहीं ।
जगदंब तू भैरवदासको शीघ्र सहाय करै जबही तबहीं ५
निजअंशतेंविश्वसृजोसगरोसबतोमें तुहीसबमेंसुखसानी ।
गतितेरी परै तै परै परमें परब्रह्मकी चेतन शक्ति बखानी॥
त्रिगुणे गुणवंत विधीश गदाधर पावत ना बहुधा उरआनी
पुन भैरवदासकोहै अनुकूल तू सूच्छम थूलकी मूलभवानी६
यज्ञोंमें जाके उचारणमात्रतें तुष्ट सदा सुरसंगति हो है ।
श्राद्धके मध्य कहैं सगरे जन पित्रोंकी तृप्तिको कारण जो है
स्वाहा स्वधा सोईतेरो स्वरूप तुही सुखदा सबको मनमोहै
जोजगदंब जपै तुझको तिस भैरवभक्तको भाग्य भलोहै७

देवीजो भक्तकी मुक्तिको हेतु अचिंत्य महव्रत जाकोबतावैं
तुच्छ विषयसुख छांड़ मुमुक्षु जती जिसकी शरणागत धावैं
संयकै आको महामुनि भैरव आपही आपमें आपको पावैं
सो अनवद्या तू ब्रह्मकीविद्यातुम्हैंसबशास्त्रश्रुतिस्मृतिगावैं
तुही तीनहु वेदनकी रचना जिसको मुनिगावत आये त्रयी।
अनवद्या जटा लौं पदक्रमते षट अंगोंतें शोभित शब्दमई॥
जिसके उपदेशतैं यज्ञ यजै पुन जीवोंकी जीवन बात भई।
तिहूंलोकमें भैरवदासको तू सुखदा हमने मनमान लाई।
वेधाकी मेधा तुही शुभगे सब शास्त्रोंके सारकी जाननहारी
केवल दुर्लभ दुस्तरसे स्तुतिसिंधुकी नाव उतारनपारी॥
श्रीमधुसूदनके उरमें वश वश्य किये तैं सदा सुखकारी।
गौरी तू भैरवको वरदा जिसको अर्द्धाङ्ग धरैं त्रिपुरारी॥
तव रुक्मकी कांतितें कांतमयंकके मंडलतें कमनीयमुखं।
मृदु-हास-प्रकाशको देख शिवे द्विज भैरवदासके होत सुखं।
अति अद्भुत तीनहु लोकनिको लख भाजत कोटिहु कोश दुखं॥
अघलोक तिसे महिषासुरने भर कोपमें कैसे कियो कलुखं।
उदयाचलपै विधुबिंबसो भैरव भासत तेरो मुखं सनथं।
कुटिलभृकुटी युगलोचन बाल्हु प्रलयके समय जैसो सूर्यरथं।
यह चित्र बडो तिह देखतही न मर्‌यो महिषासुर दुष्टकथं।
कुपितांतक मूर्तिके दर्शनतैं देवीको न चलै यमलोक पथं॥
शिवे तू सदा द्विज भैरवदासपै होहु प्रसन्न सुभाग्यके अर्थ
यदा कुपिता पुन शत्रुके वंशको ध्वंस करै सबसेती समर्थ॥
लख्यो हमने अवही अपने नयनों मनमें कैसे मानियें व्यर्थ।
विनष्ट कियो महिषासुर दुष्टको सैन्य समेत करै था अनर्थ
तिहुं लोकमें भैरव धन्य तेई तिनके धन धान्य बधू वरणी।
तिनके बहु भृत्य सुमित्र सुपुत्र फला सकला मनकी हरणी
तिनके कुलमें कमला विमला कल कीर्त्तिसों पूर रही धरणी

जिनपै तू प्रसन्न सदासे शिवे सब ओरतें आप उदय करणी
तेरी कृपातें भये सुकृती नित धर्मके कर्म करें सब सादर ।
तेरी कृपातैं विमानमें बैठके स्वर्गमें जायं कहीं न निरादर॥
भैरव तेरी कृपातें मुनी पुन जीवनमुक्त फिरें जिम बादर ।
तीनहुलोकमें तू फलदा तेरे दीखै शिवे निजभक्तको आदर।
भवकी स्मृतिमात्रतें भीति हरै तू शिवेसुयुमं तव आचरणं
सुखमें उठ भैरव ध्यान धरै क्षणमें छुट जाय जरा मरणं ॥
भयदुःख दरिद्रकी हारिणी दूसरिको जिसकी नहियेचरणं।
सबको लख भीज रह्यो करुणामृतमें तेरो चित्त कृपाकरणं॥
हरूं इन दुष्टोंको जीवोंको पुष्ट करूं व्रत मेरे लियोकरचापै ।
कुभाग्यसे दैत्य भये अब येभी चिरं नरकार्थ करो मतपापै
विशुद्धहो युद्धमेंमृत्युकोपायकै स्वर्गकोजाओ मिटैंभवतापै
शिवे यह जानके भैरवभक्तके शत्रोंका नाश करै सबआपै।
निजआयुधसे जोहनै इनको दृगरश्मिसे क्योंनहिं भस्मकरै
न करै भ्रम भैरवदास जे तेरे तुभै तो समर्थ परे से परै ।
हुत दैत्य ये शस्त्रोंसे होकै पवित्र रहो सुरलोमें चित्तधरै॥
अहितोंके विषय हितबुद्धि शिवे तू हितू सबकी मनतैं न टरै
भ्रमतौ शितशूलकी खड्गकी कांति युगान्तकी ज्यों चमकै चपला॥
तिहँ देखत ही न मिचे दृग दैत्योंके देखत ठारे न एक हला।
तव आनन चंद्रकलाधरको लख दुष्टोंकी दृष्टि भई विमला
वह भैरवदासको इष्ट शिवे जिसतैं न लगै कलु और भला।
दुर्वृत्तिकी वृत्तिको शील हरै तेरो दैत्योंसे देव किये पलमें ।
शुभरूप अनूप न ऐसो कहीं सब शोधत स्वर्ग महीतलमें
सुरहीन पराक्रम थे जिनतै ते हते तव तुल्य को है बलमें ।
करुणा करणी सुन भैरवदास की रक्षक तू जल में थलमें ॥
है उपमा न पराक्रमकी जिसको लख शत्रु भरें सब शोकमें
रूपको देखभग्यो भवको भय कौनकी तुल्य कहै कवि कोकमें

दीनपै ऐसी कृपा किसकी जाके दुष्ट विंधेरहें शूलकी नोकतें
भैरव तेरीसी तेरे विभूति शिवे पुन तोसी तुही तिहुंलोकमें
तीनहुं लोक लिये रख तैं धर चक्र त्रिशूल गदा असि हस्ते
युद्धमें दैत्योंका देह छोड़ाय चलाय दिये सब स्वर्गके रस्ते
दुष्टोंकाजो करती न पराभव तव दिवमें हम क्योंकर वस्ते ।
भैरव भक्तके दूर किये भय भो भुवनेश्वरी नित्य नमस्ते॥
चक्रकी आरसे खड्गकी धारसे चाप टकोरसे घंटेकी घोरसे।
भैरव भक्तकी रक्षाकरो शिवे शूल फिरायके चारहु ओरसे
तीनहुंलोकमें सौम्य भयानक मूर्त्तिये तेरी फिरै बड़ीजोरसे
भूतिनतैं हमको रखले लख आपने अक्षिकटाक्षकी कोरसे॥

दोहा ।

गदा खड्ग शूलादि ये लिये हाथमें अस्त्र ।
तिन सबसे रक्षा करो और जहां लों शस्त्र ॥ १ ॥

सवैया ।

भैरव देवोंने यौं करकै स्तुति स्वर्गके पुष्प लिये भर झोली
चंदनमें घसकै घनसार ।दिये अनुलेपन केशर घोली ॥
दिव्य सुगंधित धूपसों धूपित शीतल मंद समीर झकोली
प्रीतिसों पूजन पेख शिवा करवेको सुखी सुमुखी उठ बोली

दोहा ।

कहो देव वांछित सकल हो प्रसन्न वर देत ।
स्तुतिपूर्वक पूजन कियो प्रीतियुक्त जिस हेत ॥१॥
महिषासुर अतिवीर तो हतो युद्धमें आज ।
और कठिन मोको कहो करहुँ कौनसो काज ॥२॥

चौपाई ।

सुन सुर सकल सुधासम बानी।बोले जय जगदंब भवानी
भगवतितैं महिपासुर मारा।अति बलगर्वित शत्रु हमारा॥
एकही बार कियो रण मांही।शेष रह्यो कछु कारज नांही ।
यद्यपि दिये हि वनै वरदाना।तो यह देहि न मांगत आना।

तेरो स्मरण करैं हम यत्र,। हर तू परम विपत्तिको तत्र।।
पुन जे मनुज सुरन की टेरी।निर्मल वदनि पढ़ैं स्तुति तेरी
तापै नित्य प्रसन्न तथा हो।सुखसंपति धन वृद्धि यथा हो।
जब मांग्यो हमको यह दीजे।बोले ऋषि राजन सुन लीजे।।

भुजङ्गप्रयात छन्द ।

सदा आपने विश्वके सौख्य अर्था ।
करी जो सुरोंने प्रसन्ना समर्था ।।
तथास्तु तहां बोल कै अच्चराली ।
गई हो तिरोधान सो भद्रकाली ।। १ ।।
शिवाको कह्यो भूप तोसों चरित्रं ।
सुरोंसे लिया जन्म जैसे पवित्रं ।।
यही विश्वकी नित्य कल्याण-करणी ।
सुनो और याकी कथा पुण्य-वरणी ।। २ ।।

नाराच छन्द ।

निशुम्भ शुम्भ दुष्ट दैत्य नाशवेके हेतसै ।
किसी समय धर्यो स्वरूप पार्वतीके देहसै ।।
त्रिलोक रच्चणार्थ देवकार्य कारिणी यथा ।
प्रकाशती भई चरित्र सो सुनो कहूं तथा ।। १ ।।

तोटक छन्द ।

कही भैरवनाथ चतुर्थ कथा। नृपसों मुनिने वरणी थी यथा
महिषासुरमर्दिनीकी दुतिकी।इसमें मघवादिकने स्तुतिकी।

चतुर्थ अध्याय समाप्त ।

पञ्चम अध्याय

नाराच छंद ।

निशुम्भ शुम्भ दैत्य दो भये हैं सोदरा पुरा ।
महोत्सवी महोद्यमी महाबली महासुरा ।।
हरे त्रिलोक यज्ञ भाग इन्द्रहीन छीन कै ।

असर्थ गर्वसे लिये सुराधिकार छीनकै ॥ १ ॥
कुवेर वायु वह्निसोम सूर्य पाशहस्तके ।
कृत्तांत के भी कर्म वे लगे करन समस्तके ॥
अनेक बार मार जर्जरांग निर्जरा किये ।
भये भयप्रकंपिता निकास स्वर्गसे दिये ॥ २ ॥

गीतक छन्द

जब नष्टराज्य भयो पराजय सब सुरों ने सुध करी ।
गति है हमारी सर्वदा अपराजिता भुवनेश्वरी ॥
तिन दियो यह वरदान हमको प्रीतिपूर्वक तत्क्षणं ।
स्मरतें हि संकट काटकै करिहों तिहारो रक्षणं ॥ १ ॥
तिसको स्मरो जिसकी कृपा सों परमसुख पौरुष बलं
यह कर मता सब वहां गये जहां शैलराज हिमाचलं
तहँ जायकै सुर तट निकट इकठे भये भयभीतसे ।
पुन विष्णुमाया को लगे संतुष्ट करन प्रतीत से ॥ २॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ।

नमो देवि कल्याणि सर्वाणि दुर्गे ।
नमो धातृ भद्रे सुखे चिद्रूपुर्गे ॥
अये त्वां समर्था सदा मन्यमाना ।
नतास्मो नतास्मो वयं सावधानाः ॥ १ ॥

छन्द ।

नमो देवि नित्ये, कृपार्द्रैकचित्ते ।
महादेवि धन्ये, तुषाराद्रिकन्ये ॥ १ ॥
नमो गौरिगुण्ये, शिवे पूर्णपुण्ये ।
नमश्चन्द्ररूपे, प्रकाशस्वरूपे ॥ २ ॥
नमो लक्ष्मिवद्धे, सुसिद्धसमृद्धे ।
नमो दुर्गपारे, नमः सर्वसारे ॥ ३ ॥
नमो विश्वहेतो, जगत्सिंधुसेतो ।
नमः कूर्मिविरने, सदानंदधिरने ॥ ४ ॥

नमः ख्यातिमात्रे, चिदाकारगात्रे।
नमो धूम्रवर्णे अनंताच्छिकर्णे ॥ ५ ॥
महत्सौम्यमूर्त्ते, हताशेष धूर्ते।
नमो रुद्रशक्ते, महारुद्रभक्ते ॥ ६ ॥
नमः संनिविष्टे, जगत्सुप्रतिष्ठे।
प्रकृत्यै निकृत्यै, नमो विश्वकृत्यै ॥
नमस्ते २ नमस्ते २, पुनस्ते २ पुनस्ते २ ॥ ७ ॥

भुजंग प्रयात छन्द।

जिसे विष्णुमाया कहें हैं जगत् में।
उसै हम नवैं सब उसी की भगत् में ॥
उसी को कहैं चेतना विश्व माहीं।
उसै हम नवैं उस बिना विश्व नाहीं ॥ १ ॥
वही बुद्धि होकै करै न्याय नेकी।
उसै हम नवैं जो नवै हो विवेकी ॥
वहीं आप निद्रा है विश्रामरूपा।
उसै हम नवैं जो नवे सो अनूपा ॥ २ ॥
वही है क्षुधा भक्ष्यको जो दहै है।
उसै हम नवैं जो नवै सो रहै है ॥
वही आप छाया कभी पास दवके।
उसै हम नवैं जो रहै पास सबके ॥ ३ ॥
वही शक्ति है विश्व जिससे खड़ा है।
उसै हम नवैं उस बिना सब पड़ा है ॥
वही आप तृष्णा जगत् को भ्रमावै।
उसै हम नवैं जो वही हाथ आवे ॥ ४ ॥
वही शांति है विश्व की जिससे बीतै।
उसै हम नवैं जो नवै सोई जीतै ॥
वही जाति है भेद जिससै पड़ा है।
उसै हम नवैं जो नवै सो बड़ा है ॥ ५ ॥

वही आप लज्जा कुलों को कला है ।
उसै हम नवैं जो नवै सो भला है ॥
वही शांति ऐसी किसी से न अर्था ।
उसै हम नवै जो नवैं हो समर्था ॥६॥
वही आप श्रद्धा हुई सज्जनात्मा ।
उसै हम नवैं जो नवै हो महात्मा ॥
वही कांति विश्व को आप मोहै ।
उसै हम नवैं जो नित्य सोहै ॥ ७ ॥
वही आप लक्ष्मी करै राजकाजा ।
उसै हम नवैं जो नवै होय राजा ॥
वही है धृती कार्यकार्ये यशोधा ।
उसै हम नवैं होयँ योगीन्द्र योधा ॥ ८ ॥
वही वृत्ति है जीव जिसमें लगै है ।
उसै हम नवैं जो नवैं ते जगै हैं ॥
वही है स्मृती जो गुरों से सुनी है ।
उसै हम नवैं जो नवैं सो मुनी है ॥ ९ ॥
वही है दया धर्म जिस सै चलै है ॥
उसै हम नव जो नवै सो फलै है ।
वही तुष्टि है जिस विना जीव रोवै ॥
उसै हम नवैं जो नवै मुक्त होवै ॥ १० ॥
वही पुष्टि जिस सै हुआ विश्व मोटा ।
उसै हम नवैं हो हमारे न टोटा ॥
वही आप माता लड़ावै भली हो ।
उसै हम नवैं जो नवै सो बली हो ॥ ११ ॥
वही भ्रांति है और का और भासै ।
उसै हम नवैं यौं यथावत्प्रकाशै ॥
वही आप मेधा धरै शास्त्र केते ।

उसै हम नवैं होयँ सर्वज्ञ जेते ॥ १२ ॥
वही व्यास देवी भई भूतवर्त्ती ।
रहै इन्द्रियों में अधिष्ठान करती ॥
दश द्वार ही के किये हाथ ताले ।
उसै हम नवैं हों सभी शक्तिवाले ॥ १३ ॥
वही चित्तरूपा चिदानंद शक्ती ।
किया विश्व को व्याप्य भोगं भुनक्ति ॥
न जानैं बड़ा और उस से किसी को ।
उसै हम नवैं हम हव हम तिसी को ॥१४॥
उसे आपनो भैरवानंद जैसा ।
इमैं भी शिवा सो लखो नित्य तैसा ॥
हने पूर्व जिसने महादैत्य तत्र ।
तिसी को करैं हम नमस्कार अत्र ॥ १५ ॥

सवैया ॥

मन से बपु से वचनों से निये विपदा के समय त्रिदशा जिसको। स्मरतें हि हरे सब संकट यौं शरणागत की करुणा जिस को ॥ अब गर्वित दैत्यों के तेज से तापित तासैं प्रणाम करैं तिसको । वह ईश्वरी आय सहाय करै कवि भैरव और कहै किसको ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

सुनो भूप इन्द्रादि के पुण्य गाढे ।
पढ़ें थे जहां स्तोत्र यों देव ठाढे ॥
लगे सुरधुनी तीर करने बड़ाई ।
तहां स्नान को पार्वती आप आई ॥ १ ॥
सुरों सै कह्यो क्यों करो व्यर्थ सेवा ।
यहां कौन जिसके पढ़ो स्तोत्र देवा ॥
वहीं एक देवी उमादेह में से ।
निकस शैलजा से उठी बोल ऐसे ॥ २ ॥

नाराच छंद।

निशुम्भ ने किये परास्त युद्ध में प्रशस्त ये।
दिये निकास शुम्भ ने रहे कछू न वस्तु ये॥
मुझै अपार कष्ट में विचार कै परागती।
करैं समस्त देव ये मम स्तवं यथामती॥ १॥
शिवा शरीर कोशतैं हुई जो अंविके नई।
तभी से लोक लोक में प्रसिद्ध कौशिकी भई॥ १॥
प्रकाश कौशिकी को देह में सशैलबालिका।
सुकृष्णवर्ण होयकै कहाई आप कालिका॥ २॥
तिसी समय अतीव रम्य रूप धार अंविका।
भई महामनोहरा विधुप्रभा वलांविका॥
गये विलोक दैत्य दो शिवा विराजकै रही।
सुभृत्य चंड मुंड ने निशुम्भ शुम्भ को कही॥३॥
अये नई नितंविनी लखी है शुंभ एकली।
न तू वहां हुआ हुई यही उदार वेकली॥
मनोज्ञ मुग्धायौवना अनन्यरूपशालिनी।
न ता समान दूसरी लखी विशालमालिनी॥ ४॥
सुरूप में सुरी न आसुरी न किन्नरी नरी।
न पन्नगी शची रची भली विरंचि ने करी॥
महामनोरमांग मंदहास भास दामिनी।
स्त्रियों विषैं सुरत्न है दिपै गयंदगामिनी॥ ५॥
दिगंत की प्रकाशिका त्रिलोक मोहिनी बनी।
प्रकाशती हिमाद्रि को फिरै महाप्रभासनी॥
हृदय विचार लेहु छांड़िकै समस्त कार्य तू।
यथा बनै तथा मंगाव आज दैत्यराज तू॥ ६॥

तोटक छंद॥

भव में मणि रत्न भये जितने।

तब मन्दिर मांह रहैं तितने ॥
हय हींसत हैं घुड़साल बँधे ।
गरजैं वर वारण वार सधे ॥ १ ॥
धर छीन लिया दिवघोटक तैं ।
गजरत्न तथा भटकोटक तैं ॥
थरपावन नन्दन के बल में ।
सुरपादप पाड़ लियो पल में ॥ २ ॥
विधि का मनि रत्न विमान बना ।
युगहंस लगे शुभ शोभसना ॥
धर धाय कुबेर कियो कर में ।
वह पुष्पक ल्याय धरयो घर में॥ ३ ॥
वर वृक्ष उपाड़ किया वितथं ।
थरपा अपना वन चैत्ररथं ॥
अलका नगरी अवगाहनकी ।
निधि छीन लई नरवाहनकी ॥ ४ ॥
नित नूतन पंकजमाल खरी ।
विजयप्रद दिव्य सुगन्धभरी ॥
पचकै वह रत्न रची विधिने ।
करदी तब भेट पयोनिधि ने ॥ ५ ॥
यह छत्र विराजत रत्न महा ।
धननायक से डर डार गहा ॥
शिर ऊपर आतपवंचन को ।
बरषे घरमें नित कंचन को ॥ ६ ॥
रथ था यह पूर्वपितामह के ।
हरिसे अब आप लिया गहके ॥
यह शक्ति करी कर में तब से ।
रण में तज मृत्यु भजा जब से ॥ ७ ॥

सलिलाधिप पाश भरथो धरके ।
वह साथ रहै तब सोदर के ॥
मणि जे रत्नाकर के थल के ।
घरमाहिं निशुम्भ महाबल के ॥ ८ ॥
युग वस्त्रलिये निजआगम ते ।
अतिनिर्मल वह्निसमागम ते ॥
दितिजेन्द्र जहां लग रत्न भये ।
हठ से अपनी अपनाय लये ॥ ९ ॥
सब रत्नशिरोमणि सो लल ना ।
वल ना तुझ में कि नहीं कलना ॥
जिसके वह साथ भई पलना ।
तिसके कछु जीवन को फल ना ॥ १० ॥

स्रग्विणी छंद ।

चण्ड की मुण्डकी वात ये ये सुनी ।
शुम्भ ने ता समय हृद्य वोलो मुनी ॥
दूत सुग्रीव नामा भरा नीति सों ।
अंबिका पास भेजा बड़ी प्रीति सों ॥ १ ॥
कामिनी को कहो दूत यों जायके ।
बात मेरी बड़ी चित्त में लायके ॥
बुद्धि से और ऐसा करो सर्वथा ।
दौड़ के हर्षती साथ आवे यथा ॥ २ ॥
शुम्भ के पास से दूत आया वहां ।
शैल के शृंग पै सो शिवा थी जहां ॥
देखते ही कही साधु री साधु री ।
दिव्य वाणी महाकोमला माधुरी ॥ ३

गंगोदक छंद ।

देवि मैं शुम्भ दैत्येन्द्र का दूत हूं,

पास तेरे पठाया सुनो नेम सूं ।।
भाग्य तेरा बड़ा लोकलोकेश ने,
काम की बात तोसों कही प्रेम सूं ।।
कौनसो जीव ताकी न आज्ञा करै,
कीर्त्ति आगे लगै चन्द्रमा धूसरा ।
देवता सर्व जिसने लिये जीतिकै,
आज त्रैलोक्य में कौन है दूसरा ।। १ ।।
जीतिकै यक्ष गन्धर्व विद्याधरों,
को किया वश्य मेरे भये नाग भी ।
स्वर्गदंतो दिया देवतों ने मुझे,
अश्व उच्चैःश्रवा यज्ञ के भाग भी ।।
मुख्य जे रत्न ते मैं लिये लोक में,
शासना को न कोई कहीं रोकता ।
कामिनीरत्न तू भी तहां चाहिये,
मैं जहां सर्वरत्नानि का भोक्ता ।। २ ।।

तोटक छंद ।

सुखदे निजबंधु सहोदर को, मुझ को भज या मम सोदर को । रख पायन मांहि तिहूं पुरकी । प्रभुता नर नाग सुरासुर की ।। १ ।। तव आय पुराकृत पुण्य फला । अपना लख जे सब भांति भला । मणिरत्न सभी करले करमें ।। जितने दितिजाधिप के घरमें ।। २ ।। इतनी असुरेश्वर ने बरनी । करनी हितकी चित्त में धरनी ।। सुन बोल उठी अघकी हरनी । मनमें मुसकाय जग जननी ।।३।। सम शम्भ निशुम्भ बली अति हैं। अब तो तिहुं लोकन के पति हैं। तिनको बल कीरति छाय रही । यह तैं कछु दूत मृषा न कही ।। ४ ।। पर क्या करिये अब तो न हलै । एक उग्र किया प्रण मैं पहिलै ।। तिहुं काल

भई मति की जड़ता ॥ तिस कारण तैं पग ना पड़ता ५
रचकै रण जो मुझको वरले । धरकै अपने कर में करले ।
इतने बल विक्रम का कर्त्ता।रणमें मम होय वही भर्त्ता ६
पुन शुम्भ निशुम्भ समान बली । तिन सों कहदे यह
बात भली ॥ उठ एक हिमाचल लों टहलो ॥ रण में
मुहि जीत भुजा गहलो ॥ ७ ॥

स्रग्विणी छंद ।

अंबिका को प्रतिज्ञा सुनी दूतने । भावि जानी नहीं दैत्य के पूत ने ॥ काय में विघ्न को देखके बावला । बोल ऐसे उठा वंश का फावला ।१॥ देवि एता वृथा गर्व क्यों तू करै । ईदृशी बात मोसों मती उच्चरै कौनसो शूर ऐसो अहङ्कार में । जो करै शुम्भ से युद्ध संसार में॥२॥ दैत्यराजेन्द्रके भ्रातकी तो कहा । और हैं शुम्भके भृत्य कोटों महा ॥ देखते ही जिन्हें देव भागे बली । कामिनी तू करेगी कहा एकली ॥ ३ ॥ दैत्य शुम्भादि सेती भरे शोक में । देव इन्द्रादि भाजे फिरैं लोक में ॥ शुद्धि तोको नहीं क्या हुआ बुद्धि को । तत्र कैसे शुभे जायगी युद्ध को ॥ ४ ॥ साथ मेरे चलै तो बड़ा भाग री । और जो तू हृदय में करै दाग री ॥ आय कै दैत्य कैसे तुझै खायंगे । पा पकड़ खैंचके केश लेजायंगे ॥ ५ ॥ अंबिका ने कहा पूर्वले पाप हैं । शुम्भ नीशुम्भ दोनों बली आप हैं ॥ ता समय बात मोको न जानी परी । क्या करूं मैं प्रतिज्ञा करो सो करी ॥ ६ ॥ यों कहा होत है यां वृथा वाद से । जाय वृत्तान्त क्यों ना कहै आदिसे ॥ पूर्व मेरी प्रतिज्ञा हृदय में धरो । शोचकै शुभ को योग्य हो सो करो ॥ ७ ॥ पञ्चमी दूतसंवाद नामी कथा । सो कही भैरवानन्द ने थी यथा ॥ जो पढ़ै

ह्वै प्रसन्ना शिवा ता बली। यों भई कंठ की घघरवावली

पञ्चम अध्याय समाप्त।

षष्ठ अध्याय

पद्धती छंद।

ऋषि कहैं शिबा की सरल बात।
सुन भयो दूत संतप्त गात॥
तहँ कथा आय वरणी अशेष।
जहँ सुभट शुम्भ था दितिसतेश॥ १॥
वरवचन शुम्भ सुनकै अनिष्ट।
भरगया क्रोध में अतिबलिष्ट॥
ढिग लख्यौ धूम्रलोचन सुरारि।
यह कही बात तासों पुकारि॥ २॥
यह भली भामिनी भरी गर्व।
जिन गणे दैत्य तृण तुल्य सर्व॥
सजकै समस्त निजसैन्य धाव।
गह केश साथ ले शीघ्र आव॥ ३॥
अरु जो सुरेन्द्र गन्धर्व यक्ष।
दृढ़कक्ष होय कर करै पक्ष॥
तिहं मार मुद्‌गरों वार वार।
पहिले पठाइये यमद्वार॥ ४॥
सुन वचन शुम्भ को किया तुष्ट।
उठ सभामध्य धूम्राक्ष दुष्ट॥
निज सैन्य साथ सब लिया बोल।
तव लगे आवने दैत्य गोल॥ ५॥
कर खड्ग चर्म शित चक्र चाप।
शर शूल शक्ति गह उठे पाप॥
परघ कुठार तोमरा विशाल।

धर मुशल मुद्गरे भिंदपाल ॥ ६ ॥
पुन पटे पाश बहु गदा पाण ।
पहरे सुवर्णमय तनुत्राण ।
सज सुभट युद्ध के विविध ठाठ ॥
चढ़ चले दैत्य हज्जार साठ ॥ ७ ॥
जब लगे दौड़ने दैत्य शूर ।
उड़ गगनगामिनी भई धूर ।
इमि धाय धाय आये तुरन्त ॥
जिम ओघ मेघ के वेगवंत ॥ ८ ॥
हिमवंत शैल की विपुल पृष्टि ।
तहँ लखी अंबिका दूर दृष्टि ॥
लख धूम्रनेत्र बोल्यो कुकाय ।
द्रुत पास शुंभ के क्यों न जाय ॥ ६ ॥
सुन यहां शैल में कौन सभ्य ।
मत करै व्यर्थ यौवन अलभ्य ॥
वह शुंभ दैत्य राजाधिराज ।
चलकै प्रसन्न कर ताहि आज ॥ १० ॥
नहिं पकड़ केश लेजाउँ तोहि ।
फिर दयाभाव आवै न मोहि ॥
बहु कहो दुष्ट ने मान मान ।
कछु करी अंबिकाने न कान ॥ ११ ॥
भर कोप सैन्य से निकस आप ।
जब गयो दौड़ कै निकट पाप ॥
कर उठी शक्ति हुंकार मात्र ।
जर भये भस्म धूम्राक्षगात्र ॥ १२ ॥
तिहं काल दैत्य सब रहे हेर ।
धूम्राक्ष होगया भस्म ढेर ॥

निज दैत्यनाथ का देख अस्त।
मरगयो सैन्य रिस में समस्त ॥ १३ ॥
इक बार धाय कर मार मार।
सब लगे वर्षने दैत्य सार ॥
शर शूल चक्र आयुध अनेक।
मिल फिरैं मेघसे एक एक ॥ १४ ॥
इमि शस्त्र वर्षते लखे पाप।
कर झटिति मंडलाकार चाप ॥
शर हने शिवा नै जोड़ जोड़ ॥
द्रुत गये चर्म अरिमर्म तोड़ ॥ १५ ॥
गिरपड़े दैत्य उर फूट फूट।
वह रही रक्तकी बुंद छूट ॥
पुनि निशित शक्ति की करी चोट।
अरि भये पेट फट लोट पोट ॥ १६ ॥
गह कर कुठार मन की उमंग।
फिर किये शत्रुगण अंग-भंग ॥
अति कठिन कंठ काटे कराल।
पुनि दिये झाड कड़ कड़ कपाल ॥ १७ ॥
भुजमूल भेद करकिये डुण्ड।
लुढ़ पड़े रुंड विनतुण्ड मुंड ॥
कितने कुकाय धर पड़े डुंड।
भरगये रक्त के भूमि कुंड ॥ १८ ॥
तब सिमट दैत्य जिमि अरुण अब्द।
मिल किया किलकिलाकार शब्द ॥
धुनि सुनी सिंह ने उठ्यो गर्ज।
डगमगी भूमि अरि गये लर्ज ॥ १९ ॥
धुतकेश पुच्छ शोभी अनंत।

मुख बाय धाय विकराल दंत॥
उठ झटिति दैत्य भट लिये दाव।
कर दिये रुंड शिर चाव चाव॥ २०॥
जिन के झुकाय दी एक धौलि।
लुढ़ पड़े दुष्ट उड़गये मौलि।
झड़ झड़ नखाग्र से फाड़ वर्म॥
सब लिये जाढ़ से काढ़ मर्म॥ २१॥
धर दिये डाल नीचे निकृष्ट।
सब दी उधेड़ पंसुली पृष्ट॥
कितने विरुद्ध में पकड़ नाड़।
ली जड़समेत धड़ से उखाड़॥ २२॥
लगतेइ नखाग्र उर हाड़ माँस।
फटगये पेट छुट गये साँस॥
घट तोड़ तोड़ कै दंत जाढ़।
सब रुधिर पीगया जीभ काढ़॥ २३॥

छंद।

लड़े दैत्य जेते, गया खाय तेते।
लिये दाव जेजे, यमद्वार भेजे॥ १॥
किते दैत्य तोड़े, भये पांव खोड़े।
रहा शुद्ध नाहीं, गिरे युद्ध माहीं॥ २॥
लसै सिंह ऐसा, महाकाल जैसा।
रहा ना निरोधा, मरे दैत्य योधा॥ ३॥
किते दैत्य तुत्ता, फटे पेटकुत्ता।
कटे नाक कानो, रहे सांय मानो॥ ४॥
फिरै सिंह दौड़ा, हुआ सैन्य चौड़ा।
खुली आंख जागे, भये भीत भागे॥ ५॥
खुलो घाव चूल्हे, गये टूट कूल्हे।

रहे आह ही में, मरे राह ही में ॥ ६ ॥
बचे दैत्य दो थे, करे पाप जो थे।
बिना नाकवारे, नखों के विदारे ॥ ७ ॥
धुनैं मुण्ड माथा, कही जाय गाथा ।
भई तत्र जेती, सभी शुंभ सेती ॥ ८ ॥
सुरारे सुरारे, सभा में पुकारे।
मरे दैत्य हारे, जहां लों हमारे ॥ ६ ॥
सुधूम्राक्ष नामा, गया यत्र भामा ।
अघों का विलासी, भया भस्मराशी ॥ १०॥
सुनो शुंभ ने ज्यों, भई युद्ध में ज्यों ।
गया होय होला, सभामध्य बोला ॥ ११ ॥

भुजंगप्रयात छंद ।

अरे चंड रे मुंड बैठे कहाँ रे।
भया भस्म धूम्राक्ष वे दैत्य मारे ॥
बड़ी से बड़ी साथ सेना सजाओ ।
रहै नाक जैसे तहां शीघ्र जाओ ॥ १ ॥
पकड़ लीजियो जीवती कामिनी को ।
फिरै दोष देती हुई दामिनी को ॥
यहां बांधकै ल्यावने में भली हो।
धरो सिंह को धाय तुम भी बली हो ॥ २ ॥
गहा जाय ना युद्ध में जो मृगारी ।
लखो सर्वथा शूर संग्रामकारी ॥
सभी होयकै इकबले शस्त्र कीजो।
शिवासिंह को तो वहीं मारदीजो ॥ ३ ॥
गहो केश या बांध ही कै मरों को ।
यहां ल्याइयो शीघ्र मोपै अरों को ॥
लखैं दैत्यपत्नी मिटै शोक चंडा ।

खुशी होयँगी जो भई बालरंडा ॥ ४ ॥
भया भस्म धूम्राक्ष सेना भी नष्टी ।
कथा थी यथा सो हुई पूर्ण षष्ठी ॥
सुनावै सुनै भैरवानन्द याको ।
शिवा हर्ष कै देत संपत्ति ताको ॥ ५ ॥

—०—

सप्तम अध्याय

॥ भुजंगप्रयात छंद ॥

सुमेधा कहैं दैत्य दैत्येन्द्र जेते ।
रहे थे बड़े गर्व में पूर लेते ॥
सभा में सुनी शुंभ की उग्र आज्ञा ।
उठे शस्त्र लेले न थे मंदभाग्या ॥ १ ॥
पदाती रथी साजकै दैत्यनाहा ।
गजारूढ केते किते अश्ववाहा ॥
महामेघ कैसे चले वायुतुंडा ।
चमू के हुए अग्रणी चंड मुंडा ॥ २ ॥
चतुर्द्धा चमू के पदन्याससेती ।
किधौं स्वर्ग को भू उड़ी धूर एती ॥
घड़ी घोरती शस्त्र विद्युच्छटासी ।
गई दौड़कै दैत्यसेना घटासी ॥ ३ ॥
तुषाराद्रि का स्वर्ण का शृङ्ग ऐसा ।
प्रभा से रहा व्योम को स्पर्श जैसा ॥
लखी अंबिका तत्र देखै तमाशा ।
चढी सिंह पै यों हँसै मंदहासा ॥ ४ ॥
तिसै दूर से देखकै दैत्य गाढे ।
भरे रोष में कोष से खड्ग काढे ॥

धनुष पै धरे बाण सन्निद्ध धाये ।
शिवा ने लखे पाप के बाप आये ॥ ५ ॥

नगचामर छंद ॥

शिवा सुरारि सैन्य को विलोकि कोप में भरी ।
तदा मुखेंदुबिंबने नवांबुदप्रभा धरी ॥
लखी ललाटपट्टिका भ्रुकुट्टि चापसी नई ।
विशाललाललोचना कराल कालिका भई ॥ १ ॥
उठी सपाश खड्ग ले मृगेंद्रचर्मवासिनी ॥
विशुष्कमांसभीषणा अशेषदुष्टनाशिनी ।
धरों मनुष्यपंजरं नृमुंडमालमंडिता ॥
चली भली विरुद्ध को समस्तयुद्धपण्डिता ॥ २ ॥
अनंत दंत जाढ़ की विदीर्णवक्त्रमंदरम् ।
लसै कि नील शैल की खुली विशाल कंदरम् ॥
कराल जीभ काढ़ दुष्टजाल को कढूरती ।
भई तदा निनाद से दशों दिगंत पूरती ॥ ३ ॥
कड़क कपालमालिनी सुखोलकै दृगंचला ।
पड़ी अखण्ड वेग से यथा प्रचण्ड चञ्चला ॥
हुआ चपट्ट चौड़ बीच में रहा न ओट को ।
किया रणांगणार्थ लोटपोट दैत्यकोट को ॥ ४ ॥
समूह के समूह दुष्ट दैत्य हेर हेर कै ।
दिये खपाय फांस फांस पाश में कढेरकै ॥
किये विमुंड रुंड खंड खंड खड्गधारसै ।
मरे अनेक रक्तकुण्ड मेदमाँसगार सै ॥ ५ ॥
विशाल खड्ग हस्त में यथा करालदामिनी ।
लसै अनंत कोप की समुद्र रुद्रभामिनी ॥
फिरै अमंद मीचसी चमूसमीप वर्तती ।

अधर्म कर्मराशि के सधर्म मर्म कर्त्तती ॥ ६ ॥
समेत आसपास के सजे सुरारि साथ में ।
धरे धराधरेंद्र से गयंदवृंद हाथ में ॥
सशूर सांकुशग्रही पिनद्ध रत्न साजके ।
करी न वेर वेरसे भखे लखे न आजके ॥ ७ ॥
ससारथी रथी महारथी समेत युद्ध में ।
रथै सवाजि भत्तणै लगी शिवा विरुद्ध में ॥
विशाल कालपाश सी भुजा पसार तत्तणं ।
सकेर दैत्यसैन्य को किया समस्त भत्तणं ॥ ८ ॥
भ्रमें महामहासुरेंद्र जीभ की लपेट में ।
हुए कपाल चूर्ण दंत जाढ की झपेट में ॥
कुढै मुखांतराल में पढ़ै यथा अथर्वणं ।
घुले मिले परस्परं भये सशस्त्रचर्वणं ॥ ९ ॥
अकालकाल कालिका को देख दैत्य बावले ।
महामहास्त्र शस्त्र के झिरै प्रहार तावले ॥
शिवा ने तीव्र दंत से मथे प्रहर्ण आवते ।
किये समास शत्रु आप धाय धाय धावते ॥ १० ॥

कवित्त ।

केतों के पकड़ केश पटके शिलातल पै ।
केतों के मरोड़ तोड़ डाले नल घटके ॥
केते गई चाव केते पांव तलै दिये दाव ।
पंशुली समेत खुलगये बंध कटके ॥
केते शिर मौड़ नरपञ्जरसे दौड़ दौड़ ।
मारे ठौड़ ठौड़ देखें दैत्य भट तटके ॥
खंड खंड खड्ग से सुमुण्ड मुण्डमालिनीने ।
झड़ दे उड़ाय दिये जैसे वटा नटके ॥ १ ॥

नाराच छंद ।

चणेक में प्रलय किया समस्त सैन्य दुष्ट का ।
लखा समुण्ड चण्ड ने बचा न एक मुष्टका ॥
विशुद्ध युद्ध को कुबुद्धि दौड़के गये तहां ।
शिवङ्करी शिवा बनी भयङ्करी फिरै जहां ॥ १ ॥
अशेष दुष्टधर्षिणी को धर्षणे प्रहर्षता ।
चला अमंद मंदबुद्धि वाणवृष्टि वर्षता ॥
लखै भयानकाचिणो करी न चित्त आतुरी ।
लगा दिखावने प्रचण्ड चंड चापचातुरी ॥ २ ॥
यथा यथा लगा हि चंड पूरणै शरावली ।
करै तथा तथा हि मुण्ड चक्रवृष्टि तावली ॥
ग्रसे शिवा ने मुण्ड चक्र चंड के वृषोदरे ।
लसे सहस्त्ररश्मि से धसे घने घनोदरे ॥ ३ ॥
लिये प्रसक्त चक्र चाव घग्रदंत जाढकी ।
मनो रही निकाल जीभ दामिनी असाढ की ॥
अगाध कुण्डसा फलाय तुण्ड धूम्रमर्दिनी ।
हसी महाट्टहासती प्रकोपमें कपर्दिनी ॥ ४ ॥

कड़का छन्द ।

हँसी कड़ककर कालिका शत्रुसंहारिणी धायकै दुष्ट को जायलीया । उहीं पकड़के केश उस चण्डके मुण्डको खड्ग सूँ खण्डकै पृथक् कीया ॥ लखा चंडका रुंड लोटै पड़ा देखकै मुंड दौड़ा बड़ा बांध हीया । लखा शांभवीने तिसै एक ही वार । खट्वांग सूँ मारकै डारदीया ॥१ ॥ भजे चंड ओ मुंड की लोथ को देखकै शेष जे थे रहे दैत्य तुच्छा । खड़ा एक ना युद्ध में दुष्ट केते पड़े कटे कोटों फटे पेट कुच्छा ॥ लिहों चण्डका मुण्ड अरु मुण्डको हाथमें भक्तके दुःख दारिद्रहरिणी । बड़े हासमें आयकै चंडिका सों कहै कालिका मात कल्याणकरिणी ॥२॥

॥ नगस्वरूपिणी छन्द ॥

प्रसन्न होहु चंडिके प्रचंड चंड मुंड ये ।
किये मैं भेंट रक्त के भरे अनेक कुंड ये ॥
पशू निशुम्भ शुम्भ की करो ससैन्य चूर्णता ।
समस्त युद्ध यज्ञ की तुही करैगी पूर्णता ॥२३॥

॥ कवित्त ॥

देख चंड मुण्ड हू को चंडिका प्रसन्न भई भरे रक्त कुंड गये दैत्य दुष्ट मरकै । लई भेंट मान सन्मान किया कालिका का बोली महामधुर वचन हित भरकै ॥ पास मेरे लाई है मरों को जिस कारण ते दूर किये देवों के दरिद दुःख धरकै । भैरव जो तोहि पूजै सिद्ध सब होय हो जगत् में प्रसिद्ध तू चामुंडा नाम करकै ॥ २ ॥

॥ नगस्वरूपिणी छंद ॥

शिवाने चण्ड मुण्डको, बधा विरुद्धमें यथा ।
भई महा मनोज्ञ-पूर्ण, सप्तमी कथा तथा ॥
कही है भैरवाख्यने, पढै पवित्र भर हो ।
सुनै सदा रहै सुखी, दरिद्र दुःख दूर हो ॥१॥

सप्तम अध्याय समाप्त

अष्टम अध्याय

दोहा

चण्डमुण्ड जब मर गए, तदनन्तर निज काज ।
शुम्भ कहा करता भया, सुन बोले ऋषिराज ॥

छंद ।

मरे चण्ड मुण्डा, भरे रक्त कुण्डा ।
प्रलैकीसि मैना, भई नष्ट सेना ॥ १ ॥
सुनत शुम्भ भड़का, हुआ सोच जड़का ।

भया कोप ही के, वशीभूत नीके ॥ २ ॥
उठा बोल ऐसे, बचो दैत्य भैसे ।
करो काज तैसे, रहे नाक जैसे ॥ ३ ॥
मुझे वासना है, यही शासना है ।
जहां लों सुरारी, धरा-व्योमचारी ॥ ४ ॥
धनुर्बाणबोधी, गदाखड्गयोधी ।
लिये शस्त्र नाना, चलो सावधाना ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

छासीके छासी हो सेनापती तुम, आपनो आपनी सेना सजावो । कम्बुओंकी वो चौरासी कोटि बीर्योंकी पंचास बोल पठावो ॥ धूम्रोंकी सौ ध्वजिनी कालिकेयक कालिक दौर्ह्द मौर्य बुलावो । दैत्योंकी जात जहां लग है सब लेकर संग अभी चढ़ धावो ॥

छंद ।

करके यह शासन शुम्भ चला, जिसके वश थी जगती सकला ॥ १ ॥ सहसों सुनके अबला अबला, बहु दैत्य चले सबला सबला ॥ २ ॥ सहसों चतुरंग चमू खलकी, जिमि सिंधुतरंग उठी जलकी । मनकी गतिसो जिनके बलकी, पहुँचे सब ओर हिमाचलकी ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

शुम्भकी सेनाको देख भयङ्कर चण्डिकाने टुक चाप टकोरा ॥ ज्याधुनकी ध्वनिसे धरणी गगनान्तर पूर दियो सब ओरा । देवीका सिंह दड़ूक उठा घनसा पुन अम्बिकाका घण्टाघोरा । भैरव भक्तोंके भाग्य जगे सब दैत्य भये बधिरे सुन शोरा ॥ १ ॥ मानकै तीनहु शब्द भयङ्कर दैत्योंके लागे हिये मन टूटन । सिन्धुसा आनन बायकै काली लगी किलकारन प्राणघरूटन ॥ शूरोंको डारके लूटे

तुरङ्गम कान लगे सब सेनाके फूटन । शुम्भ लगा सुन कै शिर कूटन आप हो आपमें घूटसो घूटन ॥२॥ चारहु शब्द दिशा विदिशामें मथामक होय रहे दृढ़ कर्षण । सेनाकी बुद्धि गई सुनकै तब भैरव देव लगे सब हर्षण ॥ दूरसे देख हिमाचलको पुन धायकै शुम्भके शूर अमर्षण । देवीके कालीके सिंहके सन्मुख मेघसे बाणलगे बहु वर्षण॥३ या तैं अनन्तर सातहुँ देवोंके देहों तैं देवी उठी मन भाई । तैसे ही वाहन भूषण वस्त्र सशस्त्र पराक्रम वेदोंने गाई ॥ दुष्टोंके नाशके कारण भैरव भक्तोंके पालनको घरघाई । कोटहु शक्तों को संग लिये रण देखन चण्डीके संनिधि आई ॥ ४ ॥

कवित्त

कामग-बिमान चतुरानन—का मन जान,
हंस लगे जामें तामें बैठी महाराणी है ॥
कण्ठसूत्र, अक्षमाल भक्त रक्षपाल याके,
करके कमण्डलुको पानी ही कृपाणी है ॥
जेती वेदवाणी जाके मुखकी कहानी,
जिन जानी विप्र भैरव सो देव अगवानी है ॥
लै अखण्ड दण्ड शीघ्र चाण्डिकाके पास आई,
ब्रह्माजीकी शक्ति ताको नाम ब्रह्माणी है ॥ १ ॥
गैल किये शिव आप बैल पै सवार होय,
हाथमें त्रिशूल ले भटिति उठि धाई है ॥
अङ्ग अङ्ग भूषण भुजङ्गके विराजमान,
भालपै सुधाधरकी रेखा लख पाई है ॥
भैरव भगतके दरिद्र-दुःख-मोचनी,
त्रिलोचनीकी जो कुछ परम प्रभुताई है ॥
चण्डिकाका युद्धपन्न देखबेको आई जो,

महेश्वरकी शक्ति सो महेश्वरी कहाई है ॥ २ ॥
मोर पर बैसी रणविजयकी सिद्धि जैसी,
चाहिये थी तैसी पुत्रवधू त्रिपुरारी की ॥
व्याघ्रचर्मवासिनी सो भैरव प्रभासनी है,
देवदुःखनाशिनी हुतासिनी-सुरारिकी ॥
ले ले करवाल धाई योगिनी कराल संग,
हाथमें कपाल रक्तपाल दिश चार की ॥
दैत्य दानवोंसे युद्ध करिवेको युद्ध माँहि,
महाशक्तिधरे शक्ति आई है कुमार की ॥ ३ ॥
भैरव वैकुण्ठकी सभामें जगदम्बिकाने,
अम्बिकाके घण्टेकी तनक धुन कान की ॥
ओढ़कै पीताम्बर गरुडपै आरूढ़ भई,
करकै चढ़ाई चण्डिकाके सनमान की ॥
कोखमें खड्ग हाथ शङ्ख चक्र गदा पद्म,
साक्षात् मूर्ति तो अभय वरदान की ॥
युद्धयज्ञ-मण्डनी असुरशिरखंडनको,
वैष्णवी शक्ति आई विष्णु भगवान् की ॥४॥

सवैया।

धरकै वपु शूकरको मधुसूदन पैठे पतालमें बारि भराही।
तिम मारकै चूर्ण किया हरिणाक्षकू छीनलई अवनीनडराहीं
जलमेंजाकेदन्तकीकोटिपैपद्मनीपल्लवसीनवखण्ड धराही
ढिग भैरवचंडिके आईहैसोतिसयज्ञवराहकीशक्तिवराही॥

कवित्त।

अम्बिकाके घण्टेको अखण्डध्वनि पुनपुन,
श्रवनोंमें सुन सुन मानो भई बावली ॥
धावनेमें केशोंकी झपेटसे गिरै नक्षत्र,
गगनमें होगई कम्पित ग्रहावली ॥

वज्रतैं कठोर घोर तीव्र-दन्त जाढ़ जाके,
कालकरवालतैं कराल नखरावली ॥
नारसिंही शक्ति नरसिंहकी निःशंक आई ।
भैरव निपट चण्डिकाके तट तावली ॥

सवैया।

चतु सहस्र खुले सुनकै धुनि धाई है रत्न अलंकृत कैसी। शक्रकी योग्य रची विधिने शुभ शोभाके सिंधु की सम्पति जैसी ॥ संग हैं कोटहुँ देवी तरङ्गसी वज्र लिये गजराजपै वैसी । आई है ऐन्द्री जो इन्द्रकी शक्ति सु भैरव चण्डीके सन्निधि ऐसी ॥ १ ॥ सुरशक्तोंमें भैरव ठाढे हि थे शिव चण्डीसूँ ऐसे लगे कहने। इन दानव दैत्योंको शीघ्र हनो अब पावैं नहीं ये कहीं रहने। हम होंयगे तुष्ट तभी जब दुष्टोंके कोटके कोट लगें ढहने। चिरकालकी योगिनीचक्र तृषाकुल दीजिये रक्तनदी बहने ॥ २ ॥ ईशके शासनको सुनकै सब देवी प्रसन्न हुईं रुचि बाढ़ी। तत्क्षण चण्डीके देहतैं शक्ति भयंकर मूर्त्ति भई उठ ठाढ़ी ॥ शब्द शिवा-शतकी सम बोले खुला मुख चीर समुद्रकी खाड़ी। योगिके उत्तर देवेको योगन सी निकसी मानो छोड़के साड़ी ॥ ३ ॥ सुन चण्डी कहै भगवन्त तिहारी विभूतिसौं भूषित धूम्र-जटा। सबसेती बड़े अपने तपतेजतैं हो अपराजित वेद रटा ॥ वनकै तुम दूत कहो इतना इनको रणमें करना है कटा। बलगर्वित शुम्भ निशुम्भ समेत जे आये हैं दानव दैत्य भटा॥४॥ इन्द्रको दीने त्रिलोक सबै सुर यज्ञके भाग यथाविध पावो। जीवन जो अपनो तुमको चहिये भज शीघ्र पतालकू जावो ॥ हो अथवा बलगर्वित उद्यत युद्ध में आवो विलम्ब न लावो। मांस तिहारो अघायकै

खायगी भूखी शिवा मेरी भोग लगाओ ॥ ५ ॥ शुम्भ निशुम्भपै भेजदिए त्रिपुरारिं विचारिकै पुन्यविभूतो। चण्डीने भैरव भेजदिये शिवलोकमें यातैं भई शिवदूती॥ क्रुद्धित और भये सुन दुष्टोंकी मीचु जगी चिरकाल की सूती। ज्वालाके सन्मुख दैत्य पतङ्गसे धाये दिखावनकू रजपूती ॥६॥ धायकै शस्त्र किये पहिले बलगर्वित दानव नीतिके पूरे। बाणों की ऐसी करी वर्षा न रह्यो दिन रातमें भेद कछू रे॥शक्तिपै शक्ति चलावत चक्रोंसे छाय रहे दिमवन्त कंगूरे। लेके शरासन भैरव देवीने कालकी दृष्टिसे दुष्ट कटूरे ॥ ७ ॥ हननं हननं सब शक्ति उठी करघण्टा बजा घननं घननम्। झननं झननं झनके भुज देवा के बाण छुटे सननं सननम् ॥ फननं फननं शरशल्ल परश्वध, चक्र कटे ठननं ठननम्। गननं गननं गिरि दैत्य पड़े, उड़ मुण्ड गये भननं भननम् ॥ ८ ॥ तासमैं कालिका अग्रणी होयकै शत्रु शूलाग्र में पोय लिये। कोटिके कोटि खट्वाङ्गकी चोटसे गोट में लोट से पोट किये ॥ दौड़में चौड़ करने लगी मारकै ठौड़की ठौड बैठाय दिये। खूंदमें गूंदसे पड़गए देखकै फटगए माड़ से दैत्य हिये ॥ ६ ॥

त्रिभंगी छन्द

करवेका पाणी ब्रह्माणी दौड़ी दानव मत्तोंकू।
बरसे जिम सावन लगी बुझावन क्रोध अगनके तत्तोंकू॥
ठिर गरे सकल जलहुआ अनल हिमयथा कमलके पत्तोंकू।
न रहा बलवीर्य गिराय दिये लुक भई भिरड़के छत्तोंकू॥

सवैया

माहेश्वरीने त्रिशूल सूंभेदे हदे असुरोंके लखी जबएती।
वैष्णवीनेभी चक्रोंसे दुष्टोंके मुण्ड उड़ाय दिये धड़सेती॥
तामें पूर्ण कुमारकी शक्तिने शक्ति से खोलदई कटि

केती । दैत्य पै दैत्य पडे रणमें मानो आए हैं रुद्र कटा-
वन खेती ॥ १ ॥ ऐन्द्रींने मारकै वज्र सों दानव दैत्य
धमाधम लोनसे कूटे । पीठमें सौ सौ गए खुल संभक
रक्तकी बुन्द वही शिर फूटे ॥ यज्ञवराहकी शक्तिने
दौड़कै तुंडसे डार दिये उर टूटे । आंत तले फिर जाड़
में काढ़के पेट फटे सब कामसे छूटे ॥ २ ॥ गरजी नर-
सिंहकी शक्ति तभी धुनसेती दिगन्त रहे भरके । तिन
दौड़के युद्धमें दानव दैत्योंकी तोड़के नाड़ दिये धरके ॥
उरसेती लगायकै पेट नखोंसे विदारकै डारे पृथक करके ।
बहु दुष्टोंको दाबकै चाव गई लख रूपकू केते मरे डरके३
युद्धमें दुष्टों की देख दशा शिवदूती प्रचंड हँसी मन
भायके । हासमें मोहित होके महीमें गिरे गिरिकन्दरसे
मुख बाय कै ॥ धायकै खायगई तिनको दोऊ हाथोंसे
शीघ्र उठाय उठाय कै । मानकै दानव दैत्य भगे सब
सेनाको अन्त लख्यो अब आयकै ॥ ४ ॥

कवित्त ।

मातृ-गण कोपा यह कैसा रण रोपा,
फुल दानवोंका रोपा कालचक्रसे जगायो है ॥
वे किये उपाय दिये अमरी खपाय खिये,
खाय सिर पाय से सिकर अन्त आयो है ॥
दैत्य भाजे जावैं कछु सुनैं ना सुनावैं,
सब जीव दबकावैं ऐसो त्रास उपजायो है ॥
शोणितमें भीग भये सावनकी तीज तब,
योधा रक्तबीज युद्ध करनेकू धायो है ॥

स्रग्विणी छन्द ।

एकला ले गदाकूं चला ही गया ।
इन्द्रकी शक्तिसे युद्ध करता भया ॥

वज्र मारा शचीने बची भू मली ।
फट गई दुष्टकी पुष्ट वक्षःस्थली ॥ १ ॥
खुल गया घाव जैसा हृदयमें कुआ ।
दैत्य को दृष्टि आगे अँधेरा हुआ ॥
रक्त छूटा यथा शैल झरना नया ।
स्वर्णवर्णी भया दैत्य मर ना गया ॥ २ ॥
रक्तके विन्दु जेते महीमें पडे ।
शस्त्र ले ले भये दैत्य ते ते खडे ॥
विक्रमी रूप सम्पन्न तेते बली ।
युद्ध ऐसा किया मातृसेना हली ॥ ३ ॥
शस्त्रसम्पात करते हुए हेरकै ।
धायके देवियोंने लिये घेरकै ॥
जे बचे थे गदाचक्रकी मारसे ।
काट डारे पृथक् खड्गकी धारसे ॥ ४ ॥
फेर पौरन्दरीने हृदा खोलकै ।
मुण्डमें वज्र ऐसा दिया तोलकै ॥
रक्तकी बुन्द छूटीं सहस्रों भये ।
शक्ति-सेना-विषैं दैत्य लय होगए ॥ ५ ॥
वष्णवीने लखा दैत्य योधा बली ।
ज्यों करै था गदाकी प्रहारावली ॥
चक्र मारा भुजामें गया खायकै ।
हाथका हाथहीमें रह्या आय कै ॥ ६ ॥
छूटकै रक्तके विन्दु भूमें गुठे ।
दैत्य तद्रूप तातैं सहस्रों उठे ॥
फाट काढे सभी योगिनी—चक्रने ।
देख आनन्द माना बड़ा शक्र ने ॥ ७ ॥

नगस्वरूपिणी छंद ।

शचीको छोड़ दैत्यने कियो प्रहार धायकै ।

गदाधरीने मुंडमें दई गदा फिराय कै ॥
प्रतिक्रिया निमित्त दौडके चला सुरोषमें ।
मयूरवाहिनीने शक्ति दी घुसेड़ कोखमें ॥१॥
चतुर्भुजीको छोड़के गुहापै की गदा यदा ।
वराहकी वधूने खड्ग दुष्टके दियो तदा ॥
कटेनै हाथ फेर भी किया पटेकी चालमें ।
महेश्वरीने तोलके दिया त्रिशूल भालमें ॥२॥

तोमरछन्द ।

खल खायके तिरशूल, लड़ना गया सब भूल ।
पुन गदाकी सुध भई, उठ शाम्भवीके दई ॥ १ ॥
रिसमें भरा असुरार, लख मातृकोंकी मार ।
शर शूल शक्ति अनेक, कर गए तनमें छेक ॥ २ ॥
फट रही दोनों बांह, कट गयो सब सन्नाह ।
असिचक्रके परभाव, बहु खुले दारुण घाव ॥ ३ ॥
बह चला शोणित-पूर, उपजे धरनितैं शूर ।
गिरिसे बड़े बलवान्, सब रक्तबीज समान ॥ ४ ॥
तिनके सहस्रों थोक, जब लगे रोकन लोक ।
तब भये शक्र सभीत, सब देवता भयभीत ॥ ५ ॥

सवैया ।

हँस चंडिका कालीसों बोल उठी, |देवी ठाढ़ी कहा अपनो परखले । सुनलेहु चामुण्डे ये दैत्य ही दैत्य, रहे भर भूतलमें लख ले ॥ मुख बायकै धायकै तू इन दुष्टों को, पुष्टोंको गूलरसे भखले । सुर भीत निहारत भैरव भक्त, भला करुणा करकै रखले ॥ १ ॥ तेरो काम यही भखती २, इतनी लखती रहिये मदमाती । मेरे शस्त्रकी घातके शोणितसे, अबके जे जे दैत्य उठैं उतपाती ॥ खायगी तू उनको भी मैं जानत,हूं इतनेमें नाहिं अघाती ।

याहीतें मारै रहै असुरोंका न, वंश न अंश न संघ संघाती ॥२॥ पहिले करले इन दैत्यों को भक्षण जो उपजै फिर सो हरणा। भख जायगी तू जिनकू तिनका पुन संभव नाहिं हृदै धरणा । जब लौं याके कायमें रक्त रहै तब लौं यह दुष्ट नहीं मरणा । इस शोणितवीर्यका शोणित चोप इसो विधि हो विधिने वरणा ॥३॥ यौं सुन काली ने धायकै जाय लिये लखकै पृथिवीके कलङ्का । दाबकै कौलिमें दैत्य सहस्रों मिलाय दिये जैसे पङ्कमें पङ्का । लाखोंको खायगई पल माहिं लगी करने फिर सो सौका फंका ॥ पांवोंसे मेंट दिये भट कोटों गए मिट साथ ललाट के अंका ॥ ४ ॥ भैरव कालीके देख चरित्र कहैं ऋषि देवीने शूल सम्हाला । शोणितबीजके मार हृदैमें गया खुल घाव कि जैसे धमाला।चारहुँ ओर लखैं सब योगिनि रक्तका छूट चला पतनाला । पास ही पीवत कालिकाका मुख मानो लसै यमरायका आला ॥५॥ जाकी जीभ चलै विजुलीसी बड़ी मुखदन्त मनो यमरायकी जाली। शोणित बीजका शोणित पीवत रक्तकी जीघें वहैं परणाली॥आननमें उपजे जे जे दैत्य लिये सब चाव करै क्या भुखाली । भैरव आपने पासके दुष्टोंकूँ खायगई किलकायकै काली ॥ ६ ॥ खायके शूल समूल जरा रिसमें बल देवीका पेख अगाधा । माना यही तिसकूँ धिक् है जिन जीवत स्वामी का काज न साधा ॥ धायकै दुष्टने मारी गदा फिर चण्डीकूँ देख भया मन आधा । वज्रतें घोर कठोर भुजामें लगी तो सही न भई कछु वाधा ॥ ७ ॥ फिरकै जो हुआ था प्रहारको उद्यत देवीने धैर्य लखा भटका । लख दुष्ट को शूलमें पोय लिया कितनी विरियांलौं फिरा लटका । बल भैरव ताको दिखायकै धाय फिरायकै

भूतलमें पटका। उठतेके दिया पुन बज्र फटा शिर बांस मो टूट गया कटिका ॥ ८ ॥ गाढ़ा बड़ा मनका भयो ठाढ़ा गदा गहकै पुनि सन्मुख आया। चण्डीने चाप चढ़ायकै बाणोंसे मारकै दुष्टको दूर हटाया ॥ लीला लगी करनेको शरोंसे उठाय अकाशमें शीघ्र चढ़ाया। नीचेको पावने आया नहीं क्षण काया गई सो बड़ा अकुलाया॥ गर्ज रहा नभमें घनसा तनमेंसे छुटैं बहु शोणित धारा। धाय तहां मुख वाय पपीहे से पीवत योगिनी रक्त अपारा॥ कालकी जीभ लवी बिजुलीसी भयो बल क्षीण शिवाने निहारा। डारदियो धरणीमें पड़ा गिर मानो सुमेरु का तू शृङ्ग विदारा ॥ १० ॥

भुजगप्रयातछन्द

उठा क्रोध सेती हुआ देह गारा।
गदाको लिये आवता ही निहारा॥
भरी कोपमें चण्डिका पुण्य-गाथा।
लई शक्ति हाथा दिया फोड़ माथा ॥ १ ॥
लगी खड्गकी मार पै मार करने।
झुकीं योगिनी रक्तके पात्र भरने॥
चलैं चण्डिकाकी जहां खड्ग-चोटैं।
तहीं दौड़कै योगिनी पात्र ओटैं ॥ २ ॥
तदा चण्डिकाने किते शस्त्र मारे।
चले शोणितोंके सहस्त्रों फुहारे॥
तृषामें गईं लूटकै को गिनी थीं।
जिती योगिनी थीं असृग् भोगिनी थी ॥३॥
रहा देहमें रक्तका बिन्दु नाहीं।
गत-प्राण होकै पड़ा भूमि माहीं॥
तिसे देखकै देवता भूप हर्षे।

फिरै नृत्यती शक्ति आनन्द वर्षे ॥ ४ ॥
छकी रक्त पीकै भई बावली सी।
नचे योगिनी तावली तावलो सी ॥
मरा रक्तरेता सँघाती रहे ना।
रही आय आनन्दमें मातृ-सेना ॥ ५ ॥
शिवाकी कथा अष्टमी पूर्ण ऐसी।
भई भैरवानन्दकी बुद्धि जैसी ॥
इसीमें बधा रक्तरेता अभय हो।
कहै या सुनै तो जहां जाय जय हो ॥ ६ ॥

अष्टम अध्याय समाप्त

नवम अध्याय

सवैया

नृप बोल्यो शिवाको विचित्र चरित्र कह्यो हम भायो हृदे धरते। भगवन्त सदासे रहे तुम भैरव भक्तोंके संशयकूँ हरते ॥ यह भी सुननेका रहा अभिलाख प्रचण्ड थे दैत्योंके दो भरते। जब शोणितबीज बधा फिर वे भये शुम्भ निशुम्भ कहा करते ॥ १ ॥ भैरव बोले ऋषीश सुनो जब शोणित-बीज बधा बलमंडा। मारे गये बहु सेनापती जिन सेती हलै थी मही नवखंडा ॥ शुम्भ तो कोपमें डूब गया लखकोटिहि दैत्य-बधू भई रंडा। युद्ध को क्रुद्धित दौड़ा निशुम्भ करैंगे कहा फिर ये भुजदंडा २ तब दौड़के चारहुँ ओर निशम्भके सेना चली रणकी मुखिया। वह बन्धुके शोकमें बूड़ रही कितनी सुत सोदरकी दुखिया ॥ निज होठोंके चावते शस्त्र लिये जामें दैत्य सभी मुखिया मुखिया। पहुँचे तहां भैरव कोटिहुँ शक्ति-समेत जहां थी शिवा सुखिया ॥ ३ ॥ सुनकै धुनकै शिरको धुनकै पुन पाछे महाबल शुम्भ चला। जितनी

अपनी थी चमू तितनी गहकै रणमें खल जाय रला। मनमें पहले तो हनूँ उसको जिस-कारण दैत्योंका वंश गला॥ ढिग चण्डीके आया बड़े श्रमसे करता सब शक्तोंसे युद्ध भला॥ ४ ॥ जब देवीके सन्मुख शुंभ निशुंभ लिये शर चाप झुके लड़नेको। असुरोंकी चमूमें रली तब शक्तोंकी सेना भी दुष्टोंके संहरनेको। असि चक्र गदा शर शूल कुठारकी मारमें आयगए मरनेको॥ रुधिरों के झिरे झरने रणमें कट दैत्य पै दैत्य लगे पड़नेको ॥५॥ ईंघे ते भैरव देवोंकी शक्ति अनन्त घटासी उठीं छबि छाई। वर्षत वज्र गदा शर चक्र लगी तब दुष्टोंकी होन तबाई॥ ऊँघेसे दैत्योंको खड्गोंसे योगिनी यौं इकधोरे से काटत आई। काल-किसान भजो डरकै मनो रुद्र खड़े करवावत लाई॥ ६ ॥ दानव दैत्योंकी सेना गई खप शुम्भ निशुंभ लड़े थे निराले। देवीने दूरसे देखलिये दोऊ मेघोंसे वाणोंके वर्षनवाले॥ चण्डीने काट शरोंसे शरा-वली दुष्टोंके शीघ्र शरासन डाले। शस्त्रोंसे भंग किये बहु अंगोंसे रक्तके छूट चले पतनाले॥७॥ युद्धमें शुंभको देख बहिर्मुख दौड़ निशुंभने खड्ग निकासा। मारा घुमायकै सिंहके शीश पै निर्मल चन्द्रकलासा प्रकाशा॥ चण्डीने कोपमें काट छुरेसे किया असिखण्डन और तमाशा। चन्द्रिका अष्टलगीं जिसमें सो गयो उड़ चर्म कटा हथ वासा ॥८॥ खड्ग-समेत गया उड चर्म न भीतभया गह शक्ति चलाई। बीचमें चण्डीके चक्रसे भेटिकै एककी दोय भई कवि गाई। गर्जकै शूल घुमाया हि था फिर देवी ने देखी घनी तट आई। पूर्ण घुमायकै मुक्कि दई वह चूर्ण भया ताकी रेणु न पाई॥ ६ ॥ दैत्यने फेर प्रहार किया

सो गदा भई भस्म त्रिशूलकी मारी। तातें अनन्तर लेकै परश्वध दौड़ा निशुंभ भयंकर भारी॥ तत्क्षण देवीने चाप चढ़ायकै बाणोंसे दुष्टकी देह विदारी। पास लौं आवन पाया नहीं धरणीमें गिरायदिया असुरारी॥१०॥देव डरै थे सदा जिसतैं सो निशुम्भ सुवाय दियो धरणीमें। देखकै शुंभ भया बहु विस्मित अतुल विक्रम है तरणीमें॥भ्राताका ले पलटा झटसो मनसेती करै न कमी करनी में। याको तो मारै विना न रहूँ भाँवों हूजियो रुद्रहिकी घरनी में॥११॥ चण्डी जो देखै तो आवत शुम्भ चढ़ा रथ में बहु साथ सखा हैं। शस्त्रोंसे मण्डित अष्टभुजा जाकी पूर रहीं नभमें न समाहैं।चारहुँ ओरसे सिन्धु-तरंगसे सेनाके तुंग तुरङ्गमें जाहं। पाछे ते पैदल कोटिहु दानव चोटी अकाश पतालमें पाहैं॥१२॥ देवीने दूरसे शंखका शब्द कियो सुनकै धुन दैत्य हठीले। केनों को आय गई मिरगीसी पड़े पृथिवी में भये मुख पीले॥ चाप-टङ्कोर सही न गई सब सेनाके होयगए पग ढीले। अम्बाका घण्टा लगा फिर घोरन दैत्य भजे कितने निज जी ले१३ घोरसे पूररहा दशहूँ दिश घण्टा बजा जय रुद्रवधूका। तत्क्षण दैत्योंका तेज गया धुनिको सुनकै सबका मुख सूका॥ केते खड़े भट शोचहिं थे।तटसे उठ देवीका सिंह दडूका। दीनसा दिग्गज देखे अकाशको शक्रके लोक लौं कैसा है हूका॥१४॥ सिंहकी गजमें धामे थमेना तुरंगम डारभजे असवारी। लौटत दैत्य गिरोंके गई कटि टूटकै पेटमें पैठ कटारी। एतेमें कालीने कूद अकाशको दौड़ धरामें दुहत्तड़ मारी॥ पूर्वले शब्द गये मिट तातैं हले नवखण्ड डुले असुरारी॥१५॥

कवित्त

आये दौड़ २ जे थे दैत्य शिर मौड़ तब,
चौड़ करबेको आगे ठाड़ी भई जायकै ॥
शैलसे विशाल दन्त जाढ़ जीभ काढ़ काढ़,
हड़ हड़ हँसी शिव दूती भुख वायकै ॥
दैत्य गए हाल देख काल तै कराल-रूप,
डाल डाल शस्त्र लिया राह अकुलायकै ॥
सेनाको सुनाय खिसियायके रिसायो शुम्भ,
अग्रणी हो धाया शक्ति हाथमें घुमायकै ॥

गङ्गोदक—छन्द

अंबिकाने कहा रे खड़ा रौ वहीं।
दुष्ट आवै कहा तू लिये घोरसे ॥
देख तोसे पड़े दैत्य कोटों कटे।
और कोटों भखे सिंहने ढोरसे ॥
मेघकासा सुना शब्द गम्भीर यों।
शोकसे में खड़े थे लुके चोरसे ॥
देब जय २ उठे कूक आकाश में।
काढ़कै जीभ आषाढ़के मोरसे ॥ १ ॥
चित्त डोला न दैत्येन्द्र बोला कछू।
कोपमें कोयलासा बला था भला ॥
धायकै शक्ति छांडी महा—भीषणा।
ज्वालमाला बली सी यथा चञ्चला ॥
आवती अग्निहूँ की लटासी लगी।
जो कहीं भी कभी ना हुई निष्फला ॥
अम्बिकाकी महोल्का तिसे लौटकै।
ले चली निर्जला अर्ककेसी कला ॥ २ ॥
पर्वकै आपनी शक्तिकूँ सिंहसा।

शुम्भ गर्जा बड़ा हर्षता हर्षता ॥
हर्षके नादसे लोक पूरे सुरोंको ।
रहा था सदा धर्षता धर्षता ॥
धर्षके भूप पाथोदके शब्द को ।
शीघ्र कोदण्डको कर्षता कर्षता ॥
कर्षके कान लौं आन आमर्षमें ।
बाणवर्षा फिरै वर्षता वर्षता ॥ ३ ॥
धर्षता जो फिरै था बड़ा हर्षता ।
हर्षके चण्डी को दण्डको जोड़के ॥
वज्रसे सायकोंको लगी वर्षने ।
दैत्यके मार्गणोंको दिया मोड़कै ॥
गर्वमें गर्जते तर्जते देखकै ।
साथके दानवोंके हृदै फोड़कै ॥
ताड़के बाण मारे गये शुम्भके ।
चर्मको वर्मको मर्मको तोड़कै ॥ ४ ॥
दैत्यने भी शिवा के सहस्रों शरोंसे ।
शरें भेद डारे भया रेतसा ॥
शक्ति ही शक्ति संग्राममें संचरैं ।
औ खड़ा दानवोंका कटा खेतसा ॥
देखकै दुष्टको कोपकै चाण्डिकाने ।
लिया हाथमें काल-संकेत सा ॥
शूल मारा हृदै में गया पार हो ।
खायके शुम्भ मूर्छा पड़ा प्रेतसा ॥ ५ ॥

नाराच—छन्द

जगा निशुम्भ तासमैं, लगा स्वचाप कर्षने ।
मृगेन्द्र—देवी कालिकापै बाण वृष्टि धर्षनै ॥
उठा रिसाय शुम्भ भी विचार कर्म शक्रके ।

भुजा सहस्र धारकै किये प्रहार चक्र के ॥ १ ॥
चढ़ाय चाप चण्डिका चलायकै शरावली ।
दई उठाय चक्र--सृष्टि बाण--वृष्टितावली ॥
लिये विशेष--वाहिनी फिरा गदा फिरावता ।
शिवा समीप युद्धको भया निशुम्भ धावता २
दिया न चण्डिकाने दुष्ट देहसे छुड़ायकै ।
चलावतेकी खड्गसे गदा दई उड़ायकै ॥
फिरा सुरारि फेर भी विचारकै विरुद्धको ।
संभाल शूल हाथमें झुका कुबुद्धि युद्धको ॥ ३ ॥

सवैया ।

आया ज्यों शूल फिरायकै चण्डीने मारा हृदैमें निशुम्भके ऐसा । रक्तकी वम्ब खुली तिसमें उपजा पुरुषाकृति दानव तैसा । ठाढी हो ठाढी उठा कहता हँस देवीने दुष्टका देख समै सा । खड्गसे मूंड उड़ाय दिया ताका रुंड पड़ा क्षितिमें गिरि जैसा ॥ १ ॥ दैत्य निशुम्भ को मार लिया जब चण्डीने युद्धमें, देख अगाड़ी । सेनामें सिंह भराय पड़ा लखकै असुरोंकी गई बंध जाड़ी॥ केतोंके फाड़कै पेट नखोंसे पछाड़कै छातीकी तोड़ किवाड़ी । गेरिकै नीचोंकी पृष्टि उधेड़कै चाब गया सब नाड़ोंकी नाड़ी ॥ २ ॥ सिंहका कौतुक देखकै काली उठी किल-कायकै दैत्य खपावन । एक ही हाथमें हाथी रथी विरथी गह सौ सौ को भोग लगावन॥ तैसे ही हेर भुजोंसे सके रके आये थे जे जे शिवाकू डरावन । मेल लिये मुखमें सुखसेती लगी शिव-दूती भी होठ हलावन ॥ ३ ॥

कवित्त

काली शिवदूती सिंह तीनोंके चरित्र देख,
कौमारीने देखकै शक्तिसेती मारे हैं ॥
ब्रह्माणीने बढ़ बढ़ केते मंत्र पढ़ पढ़,

जलके कणकोंसे भसम कर डारे हैं ॥
बींधकै त्रिशूलसे माहेश्वरीने धरणीमें,
पटक पटक झट कर दिये खचारे हैं ॥
घोर घोर वज्रतैं कठोर उर चीर डारे,
मारे नारसिंहीके नखन पर वारे हैं ॥ १ ॥
वाराहीने तुण्ड ही से तुन्दलोंकी तुन्द फोड़,
डाढ़हीसे फाड़ डाला दानवोंको रोक रोक ॥
खंड खण्ड मुण्ड भुजदण्ड बलमंडिनीके।
वैष्णवींने चक्र-सेती, काट डारे थोक थोक ॥
इन्द्राणीने छेत छेत वज्रसे बढ़ाय कर,
छातियोंमें नाड़ शिरःबाढ़ दिये ठोक ठोक ॥
कालकीसी मैना मार दई सब सेना,
साथी शुम्भके रहेना भये जैजैकार लोक लोक

सवैया।

कोटिहुँ शस्त्रोंसे दैत्य कटे रणको तज भाज गए भट तुच्छा। कोटोंको कालीने खाय लिया मुख वाय फिरे न अघाई बुभुक्षा। कोटोंके फंके किये गहकै शिवदूतीने शीघ्र भरी कुछ कुक्षा। देवीका सिंह भी चाबकै कोटोंको चावत होठ हलावत पुच्छा ॥

तोमरछन्द।

निशुम्भ संग्राम बिषैं वधा यथा।
नवीं कही भैरवनाथ ने कथा ॥
पढे सुने याहि शिवा सुखी करै।
प्रसन्न हो संकट कोटिको हरै ॥

नवम अध्याय समाप्त

दशम अध्याय

दोहा

वध निशुम्भका वरनकै, बोले बचन ऋषीश ।
शुम्भ-मरणकी आगली ,कथा सुनहु अवनीश ॥

सवैया ।

सेना-समीत निशुम्भ पड़ा पृथिवीमें सहोदर प्राणोंसे प्यारा । शुम्भके खाय गई मनको यह देवीकी कीरति खड्गकी धारा । कोपमें दौड़कै बोला भयङ्कर क्यों गरवै तेरो है परिवारा । जाके भरोसे तू युद्ध करै मैं तो आया सभी का सँहारन हारा ॥२॥ देवी कहै मैं तो एक ही हूं, जगती में न दूसरी वस्तु कछू रे । मोको सहाय कहा चहिये, पर तेरे तो होय चुके दिन पूरे ॥ मेरी विभूती ये मेरा ही रूप मुझीमें समावत है लख तू रे । तत्क्षण शक्ति शिवा के शरीर में, लीन भईं वरणें ऋषि रूरे ॥ ३ ॥ देख रे शुम्भ मैं एक हूं देवी वे अङ्ग थे मेरे रहे रत मोमें । दुर्गति को लख ता पहिले, तुझको यमलोक को भेजती जो मैं ॥ सेना समेत निशुंभ गया, अब तू मत जानिये आप रहो मैं।ठाढ़ा है दुष्ट तू गाढ़ाहै कैसा,दिखाव कितेक पराक्रम तो मैं ॥ ४ ॥ वर्ष कै वाण लगा दरसावन, शक्र से विद्या जहां बौं अधीता । अस्त्रोंको दुष्ट लगा सृजने जब शस्त्रोंसे होयगया रथ रीता ॥ ऐसो तहां तिस काल शिवा, और शुम्भ का युद्ध भयानक बीता । शङ्कित लोक भये सब कम्पित, देखत ठाढे सुरासुर मीता ॥५॥ देवीने शम्भ के शुम्भने देवी के, दारुण अस्त्रों से अस्त्र हटाये । अम्बाने हुंकृत मात्रतें केते,परास्त किये ऋषिराज मे गाये ॥ युद्धमें दैत्य निरस्त्र हुआ, तब वाणों के मेघ बड़े बरसाये । खण्डकै चण्डीने चण्डशरों से, किया

धनु खण्डन खंड न पाये ॥ ६ ॥ देखकै आपने खंड कोदंड को, शुंभ ने शक्ति ली अग्निकी ज्वालसी । चंडिका ने उहिं चक्र सों काटि कै, डाल दी बाल सेहुंड की डाल सी ॥ फेरकै दैत्य सँहार को धारकै, मूर्त्ति विकाल मनो महाकालकी । धावता सो भया चारु चमकावता, खैंच कै खड्ग सौ चन्द्रिका ढालकी ॥ ७ ॥

गङ्गोदक—छन्द

चलायकै शरे सुरेश्वरी ने तीव्र भाल के । दिया उड़ाय खड्ग रेणु भी रहे न ढाल के ॥ लुढ़ाय सारथी रथाङ्ग तोड़ रत्नजाल के । किये तुरङ्ग अङ्ग भङ्ग थे कुरङ्ग चाल के ॥ १॥ मरे तुरङ्ग देख सारथी रहा न साथ में । भये रथाङ्ग भङ्ग चाप भी रहा न हाथ में ॥ चला रिसाय धायकै उठाय लोहमूँगरा । किया शिवा ने चूर्ण सो शरोंसे शैल कूँगरा ॥ २ ॥

स्रग्विणी छन्द ।

शस्त्र जे जे लिंये ते हुए रेणु से ।
युद्धमें शुंभकी बुद्धि ऐसी भई ॥
दौड़कै वेगसे बांध कै मुष्टिका ।
दुष्ट नै चंडिका के हृदै में दई ॥
अम्बिका के तलाघात से बात में ।
दैत्यकी छातसी बैठ छाती गई ॥
रक्त को बूँगता त्यों गिरा घूमता ।
भूमि पै सिन्धुमन्थानकी सी रई ॥
लोट कै ज्यों भभूरा भरा धूर सेती ।
धरा से उठा शीघ्र संत्रासको ॥
धायकै अम्बिका को किया अङ्कमें ।
ले उड़ा दैत्य निःशङ्क आकाश को ॥

शक्ति आधाररूपा नवों खण्डकी ।
हो निराधार ब्रह्माण्ड भांडोदरी ॥
शुम्भ की बुद्धि खोई भुजायुद्धमें ।
रुद्ध कैसे रहै कालकी सोदरी ॥ १ ॥
होय न्यारे दुहूं ओरतें आयुधौं-
को लगे वषने देवतोंने लहा ॥
शस्त्र ही शस्त्र आकाश में सञ्चरैं ।
सिद्ध बैठे लखैं जाय कैसे कहा ॥
व्योम में चंडिका का बडी वार लों ।
शुम्भ से घोर संग्राम कैसा रहा ॥
पूर्व ऐसा कभी युद्ध देखा न था ।
देख आश्चर्य माना मुनोंने महा ॥ २ ॥

तोटक छंद

तदनन्तर देखत देव दिवा ।
करकै चिरकाल नियुद्ध शिवा ॥
गह केश फिराय महाखल को ।
पटका नभ तें अवनीतल को ।
क्षिति पै गिरकै गिरिसा न|मरा ।
जिसको लखकै यमराय डरा ॥
उठकै धमका धरनी धधकी ।
मन माहिं जगज्जननी वधकी ॥

छन्द

जभी ठायकै मुष्टिका दुष्ट आया भई शूलिनी साव-धाना अगेती । महापापकी मूल उस शुम्भको देखकै फोड़ छाती दई शूल सेती ॥ गए प्राण आकाश तैं आपड़ा तब गईं भूमिपै हो शिला चूर्ण केती । डुले द्वीप सब शैल |औ सिन्धुजल खलभले खण्ड नौकी हली भूमि जेती ॥ १ ॥

कवित्त ।

शुम्भ का मरन सुन भुवन प्रसन्न मन,
स्वस्थ अति मुनिजन गावें गुण मातके ।
मेघ भये लीन नभ दर्पण नवीन जैसो,
भाजे उलकादि उत्पात दिन रात के ॥
मार्ग गामिनी नदी दिनेश भये द्युतीवन्त,
देव हर्ष न समात दीखें दूने २ गात के ।
मन्द मन्द शीतल सुगन्धित समीर बहै,
जागे अग्नि शांत हुए शोक लोक सातके॥७॥

दोहा ।

बाजे विविध बजायकै. गान करैं गंधर्व ।
जगदम्बाके विजय में नचत अप्सरा सर्व ॥
पढै सुनै वध शुंभका, हो देवी अनुकूल ।
दशवीं भैरवनाथने, कथा कही सुखमूल ॥

दशम अध्याय समाप्त ।

एकादश अध्याय ।

झूलना छन्द ।

ऋषि बोले सुरों के तपस्या करतों, कृश देह थे कष्टों को खेचतों के । युद्ध करतों हुवों मनदीन देखे, कोटों वर्षों से चरणों को सेवतों के ॥ मारा शुम्भ को दुर्गा ने शूल सेती, मेटे झगड़े सब दच्चके धेवतोंके । आशापूरणी मैय्या ने आश पूरी. चमकै चन्द्रमा से मुख देवतोंके ।१। जग्मग् ज्योति दिशोंमें विराज रही. जैजै कार करते खलघाइनी के । धरकै अग्नि को आगे इन्द्रादि आये, हां रणाङ्गणमें अनपायिनी के । ठाढ़े हाथ जोड़े भैरों-नाथ भाषैं, होरहे चतुर्वर्ग फलदायिनींके । चाहें किया

सन्तुष्ट मनलाधनीके, पढ़ैं देवता स्तोत्र कात्यायनी के २ दैवी तैं ही तो जगत् उत्पन्न किया, तुझे जगज्जननी वेद गावते हैं । तिनके दूरसे दूर ही दुःख, हरले, ऐसे चरणकी शरण जे आवते हैं ॥ तुही लोक-लोकेश्वरी है जहांलों, चराचर तेरा रूप बतलावते हैं । कोजै विश्वको पुष्ट सन्तुष्ट होकै, सकल तेरे आधीन फल पावते हैं ॥३॥ तुही विश्वका एक आधार देवी, धरा रूप भी तेरा ही कहते हैं । किया आप ही आपतें आप आपा, जिसे पीयकै पुष्टिता गहते हैं ॥ जहां लों जगजीव आधीन दुर्गे, तिनमें जे कोई गर्वको बहते हैं । उलंघैं कैसे तेरे दुर्लंघ्य बलको, दुष्ट नष्ट ही होयकै बहते हैं ॥ ४ ॥ जिसको विश्वका बीज बतलावते हैं, सो वो विष्णुकी शक्ति भी तूही वरनी । जिसके बलका कछू पारावार नहीं, अपने सेवकोंके कोटों विघ्न हरनी ॥ रचे मोहमें बांधकै जीव जिन्नै, महामाया श्रीमोहिनी रूप धरनी । कभी होय सन्तुष्ट तो दृष्टि ही से, जरा मरण से भक्तको मुक्त करनी ॥ ५ ॥ ब्रह्मविद्या को आदि ले विद्या जेतीं, सब तेरे ही रूप से फलती हैं । तीनों लोककी कामनी तेरी कला, जे किसीके हृदै से न टलती हैं ॥ तूही एक अनेकमें दीखती है, जलमें जैसे तरङ्ग निकलती हैं । जैसी तू है शिवे स्तुति कैसे करैं, अपरम्पारमें उक्ति न चलती हैं ॥ ६ ॥ जेते रूप तेरे तिनको को जानै, जिनके नाम न ग्रन्थों में पावते हैं । मुक्ति भुक्तिको भक्तोंको देनेहारी, वेद चरनोंकी ओर लखावते हैं ॥ हमसे एती हो है स्तुती सब तूही, पारावार तेरा नहीं पावते हैं । तातें कीजै कृपा नमस्कार लीजे, बारंबार तुझको शिर नावते हैं ॥ ७ ॥ बुद्धि होकै जनोंके हृदै में रहै, देवी स्वर्गकी

मोक्षकी एक दाता । घड़ी पलोंसे आयूकी पूर्ण कर्त्ता, काल रूप तेरा चला जाय खाता ॥ उदय होयकै तेरे सामर्थ्य ही से, सदा रहै है विश्व तुझमें समाता । नमो नमो नारायहणी कहा वरनैं, तू ही जगज्जननी तू ही वेदमाता ॥ ८ ॥

गीतक छन्द ।

तुहि सर्व मङ्गल रूपिणी, तुहि सर्वमंगल मूल है ।
तुहि सर्वसिद्धि विधायिनी निजभक्तपै अनुकूल है ॥
तुहि शिवा गौरी कल्पवल्ली, देत शुभ फल फूल है ।
तुहि अम्बिका शरणप्रदा, जिसके न जनकी भूल है ॥
सब गुणोंकी आधार शक्ती, सनातनि गुणगणमयी ।
उत्पत्ति पालन प्रलयकी, प्रभुता तुही भवसे भयी ॥
शरणागतोंके दैन्यदुखदल, हरविश्वकी आरत नयी ।
तिस तुझ शिवे नारायणी को, प्रणति नित्य नयी नयी ॥

त्रिभङ्गी छन्द ।

युग हंस लगे जिस पुष्पकमें, तिसमें बैठी पहचानी है ।
धर अक्षसूत्र वर दण्डकमण्डलु, करकी कुशा कृपाणी है ॥
जिन जलसे दानव दैत्योंकी, सेना सब नेड़ी आनी है ।
जय जय नारायणि तोहिं नमः, तू वो देवी ब्रह्माणी है ।१।
कर लिये त्रिशूलबघाम्बर ओढ़े वृषभारूढ़ा पहचानी है ।
अहि भूषण चंद्रकला शिर शोभित, लँकड़ ही अगवानी है
रणमें जिन कोटिक दैत्य वधे, महिमाकी अकथ कहानी है ॥
जय जय नारायणि जय दुर्गे, तू माहेश्वरि शर्वाणी है ।२।
गह शक्ति मयूर चढ़ी श्रुतिने, रणकी जय सिद्धि बखानी है ।
शशि मौलि विभूति भुजङ्गन भूषण, शैलसुता कीरानी है ।
क्षणमें इन्द्रादिक देवन को, अघ नाश किये जब जानी है ।
जय जय नारायणि जय दुर्गे, तू कौमारी निर्वानी है ।।३।।

वह जो वैष्णवि पीताम्बर धारे, चढ़ी गरुड़ पै स्यानी है ।
गह शंख पद्म वर गदा चक्र, जिन अघ हरनेकी ठानीहै ॥
अब होहु प्रसन्न हते सब दुष्ट अजहुं क्या नाहिं अघानीहै
गह चक्र गदा हरिणाक्ष वधा, फिरजो मन मांहिं उमाहीहै
धर दन्तकोटि पै भूमि निकासी, नीचे वारि भराही है ॥
जिन दुर्जर दैत्य समाप्त किये, रनकी धरनी अवगाही है ।
वह नारायणी बाराह पुरुष की, शक्ति तुही वाराही है ५
अघनाशनको कुटिल भ्रकुटी, बहु भीषण मूर्त्ति उपाधी है
अतिदारुण दन्त दिपै नखरावलि, दैत्य विदारण धाई है ॥
निजविक्रम सेरख विश्व लिया, जिसकी तिहुँ लोक बड़ाईहै
वह नारसिंहि नारायणि तू, नरसिंह रूप हो आई है ॥३॥
करके अपना जिन रूप भयङ्कर, वेष धरा अवधूती ।
किलकार विषैं डर दैत्य मरे, जिस में बल अष्ट विभूती ॥
गह कोटहुँ दानव खाय गई, जिनके तन मौत न छूती ॥
जय जय नारायणि जय दुर्गे, तू वो देवी शिवदूती ॥ ७ ॥
उर मुण्डमाल सों मण्डित दारुण, दन्त भयङ्कर तुण्डा ।
गह दैत्यचमू सब भोग लगाई, भरे रक्त के कुण्डा ॥
हँस कै रणमें जिन चण्ड हता, फिर मुण्ड हता था मुण्डा।
जय जय नारायणि जय दुर्गे, तू वो देवी चामुण्डा ॥ ८ ॥

छन्द

तू महालक्ष्मी महालज्जा, महाविद्या भूखनी ।
तू महाश्रद्धा महापुष्टी, स्वधा स्वाहा है गनी ॥
तू महारात्री माहामाया, तुहि नगिरिं की नन्दनी ।
तू ध्रुवा मेधा वरा देवी, भारती है पावनी ॥ १ ॥
तू भूतमरणी तामसी, नियता महा कात्यायनी ।
तैं वधे शुम्भ निशुम्भ दानव, अरु महा सेना हनी ।
अब हो प्रसन्न करो कृपा, आनन्द ही की हो बनी ।

हे ईश्वरी नारायणी, तू एक भी है अरु घनी ॥ २ ॥
सब ओर तेरे हाथ हैं, सब ओर तेरे हैं चरन ।
सब ओर तेरी नासिका, सब ओर तेरे हैं करन ॥
सब ओर तेरा शीस है, सब ओर मुख अघगन हरन
सब ओर तेरे नेत्र हैं, नारायणी हम हैं शरन ॥ ३ ॥
यह विश्व तेरा रूप है, विश्वेश्वरी वरणी है तू ।
सब शक्ति तेरे साथ सो हैं, अघों की हरणी है तू ॥
अरिभयों से रखले सदा, इतनी कृपा करणी है तू ।
विनती हमारी देवि दुर्गे, हृदयमें धरणी है तू ॥४॥

छंद

शशि सूर्य पावक तीन लोचन से विभूषित सुष्ट ।
अति सौम्य तेरा वदन सुन्दर, अमृत जिसकी गुष्ट॥
इन भूतगण से करो रक्षा, लखैं हम सन्तुष्ट ।
तुझको नमन कात्यायनी, तैं हते दानव दुष्ट ॥ १ ॥
करमें त्रिशूल विशाल ज्वाला, तैं कराल भला ।
जिन बींध डाले दैत्य दानव, सकल काल कला ॥
सब ओरतैं रक्षा हमारी, करो कुशल ढला ।
लख ले नमन तू भद्रकाली, पूर्ण पुण्यफला ॥ २ ॥
घन न न न घोर कठोर सै, भर कै भुवन वण्टा ।
जिन तेज दैत्यों के हरे, झगड़ा न कुछ झण्टा ॥
जिमि सुतों की माता करै, सब छोड़ कै टण्टा ।
यह करो रक्षा देवि तेरे, हाथ का घण्टा ॥ ३ ॥

छन्द

दिति-कुल-रुधिर के पङ्क-चन्दनतें सुचर्चित है किया ।
अरिमेद-मांसादिक भखे, इन भला शोणित है पिया ॥
हम नमत तैं हे चण्डिके, कर में कृपा कर है लिया ।
इस निशित निर्मल खड्ग को, कर ले सदा सुख है दिया ॥

छंद

तैं तुष्ट होकै सन्तनके रोग दोष मर्दे,
तू दूध पूत अन्न धन सम्पतसूँ भरदे ॥
तू रुष्ट हुई दुष्टके अभीष्ट नष्ट कर दे,
सवंशको सकेरके धराके तलै धर दे ॥१॥
जे आप आय जीवते इन पावनमें परदे,
तू अष्टसिद्धि नवनिधि चाहैं सोई वर दे।
विपत्तिकी तो क्या चले है मौतसे न डरदे,
वे लोक लोकके फिरैं अनेक शोक हरदे॥ २ ॥
अखण्ड एकरूपसे अनेक रूप धारे,
ससैन्य धूम्रमर्दनी तैं चण्ड मुण्ड तारे।
संहार रक्तबीजको निशुम्भ शुम्भ मारे,
अधर्मियोंके ढूंढ ढूंढ वंश काट डारे ॥ ३ ॥
न तो समान दूसरी लखी विलोक हारे,
बचाय लिये लोक देवी देवता उबारे।
तू और ऐसे काम कौन करती अपारे,
तुझै प्रणाम कोटि कोटि अम्बिके हमारे ॥४॥

गंगोदक—छन्द

वेदविद्या महावाक्य षट् शास्त्र जे,
ते विवेक-प्रदीप प्रकाशैं जिसे।
पायकै मोक्ष हो सच्चिदाल्हादिनी,
तो विना योगिनी औ बतावैं किसे ॥
आपने ही किये विश्वको मोहकै,
गर्तमें डारकै जो भ्रमावैं इसे।
ता अँधेरे विषै जो पुकारे तुझै,
तू महाश्चर्य—रूपा उबारे तिसे ॥ १ ॥

नाराच—छन्द

जहाँ वसैं प्रचण्ड राक्षसी चमूँ महालसी,

जहाँ विषाग्निमें भरी भुजङ्गजाति कालसी।
सशस्त्र शत्रुवाहिनी जहाँ है मृत्युजाल सी,
जहाँ फिरै अनेक तस्करोंको धाङ सालसी ॥१॥
जहाँ तहाँ समुद्रमें फँसी है नाव मालसी,
जहाँ जहाँ अरण्यमें लगो है दावमालसी।
तहाँ तहाँ विराजमान तू शिवे न आलसी,
रहै समस्त विश्वकी सदैव रक्षपाल सी ॥ २ ॥

गंगोदक—छन्द

विश्व है वश्य तेरे तू विश्वेश्वरी,
विश्वरक्षा विषैं नित्य साकार है।
विश्व भी रूप तेरा तुझीमें रहे,
यौं तुही विश्वका आप आधार है॥
विश्वमें तोहि जे जे नवैं भक्तिसे,
विश्व ढाड़ा उन्हींके सदा द्वार है।
आप विश्वेश साष्टांग तोको करैं,
विश्व-माता न तेरा पररूपार है ॥ १ ॥

नाराचछन्द।

बड़े अधर्मि दैत्य तैं यथा वधे परीतसे,
विनाश पाप विश्वके तू वैठिये न चीतसे।
अभीति एक तू शिवे सदैव रक्ष भीतिसे,
भव-प्रवाह रीतिकी महा महा अनीतिसे ॥१॥
सभी ग्रहोंकी घातसे महामहोतपातसे,
धरा जलप्रखातसे प्रचण्ड-वन्हि वातसे।
सशस्त्र अस्त्रपातसे समस्त जन्तुजातसे,
विष-प्रयोग-घातसे कुबन्धु तात मातसे ॥२॥
धर्म कर्म लोपतैं कलङ्क-काल धोपतैं,
अनर्थ-वादरोपतैं महानुभाव-कोपतैं।

स्वदेशमें विदेशमें जहां जहां भ्रमैं रमैं,
प्रसन्न ह्वो कृपा करो तहां तहां समैं समैं ३
शिवे तू रच्च रच्च रच्च रच्च रच्च लो हमैं,
तुझै सदा नमो नमो नमो नमो नमो नमः॥४॥

सवैया।

टरदे गुण तेरे हृदैसे नहीं रख देव लिये सब ही मरदे। मरदे सुखसौं हम पास रहैं इस मूर्त्तिको ध्यान सदा धरदे॥ कर दे स्तुति तेरी त्रिलोकके जीव ये आवत पायन गै परदे। डरदे न रहैं फिरसे वर दे भवसागर संकटको तरदे॥ १॥ ठाढ़ी सदैव रहैं चुप हो स्तुतिको सुनकै करुणा अति बाढ़ी। गाढ़ी को जात उठाई भुजा इतनी मुखतैं जगदम्बाने काढ़ी। डाढ़ी थी छाती तिहारी जिन्होंने ये दैत्य करैं जैसे सावणी साढ़ी। गाढ़ीसे गाढ़ो जो बाञ्छा तिहारी सो मांगहुँ मैं वर देवेको ढाड़ी॥२॥

दोहा

जिसमें भला त्रिलोकका, सुरगण सो वर लोह।
यह वचनामृत पीयकै, रहे चरण सब जोह॥

चौपाई

इनतैं और कछू प्रिय नाहीं, यह चिन्तन करते मन माहीं।
बोले देव शिवे मन सेती, जो सन्तुष्ट कृपा कर एती॥१॥
आगै दानव दैत्य कुकर्मी, जो हों म्हारे शत्रु अधर्मी।
नाश कीजिये तिनका ऐसे, ये सब दुष्ट विनाशैं जैसे॥२॥
यामें सब लोकनकी रच्चा, और विशेष करो जो अच्चा।
यौं सुनकै सुरगनकी वानी, बोली वचन भविष्य भवानी॥

त्रिभङ्गी छन्द

जब वैवस्वत मन्वन्तरमें अट्ठाइसवां युग होगा,
कहियेगा सो कलिकालपरस्पर कलह करेंगे लोगा।
उपजेंगे शुम्भ निशुम्भ असुर दो और जगत्में रोगा,

तब नन्दगोपकी वधू यशोदा वह मम जननी योगा १
उस अम्बाके मैं उपज उदरसे हर लूँगी भव-त्रासा,
उन शुंभ निशुंभ महाअसुरोंका शीघ्र करूँगी नाशा।
वर देके भक्तजनोंकी पूरण करनेको सब आशा,
तबसे इस कारण होगा मेरा विन्ध्याचलमें वासा २
फिर वे प्रचित्त उपजेंगे दारुण असुर तिन्हैं लख लूँगी,
तब मैं धरकै अवतार भयंकर देवनका पख लूँगी।
वधकै रणमें अघ-कोटनको सब लोकनको रख लूँगी,
अति दुर्जर दानव दुष्टनके कुल गूलरसे भख लूँगी३
अरि घर्वणसे रद असुर लसैंगे दाडिम पुष्पसमाना,
सुरस्वर्ग विषैं नर भूमंडलमें भाषैंगे स्तुति नाना।
जब रक्त-दन्तिका लेले मेरा नाम करेंगे गाना,
कर दूँगी पूण मनोरथ जो जो चाहेंगे वरदाना।४।

गंगोदक छंद

फेर होगी अनावृष्टि सौ वर्ष की
स्तोत्र भूदेव मेरे पढ़ेंगे तथा।
जन्म लूँगी विना ही बसे गर्भके
शीघ्र आकाशमें अभ्ररेखा यथा॥
धारकै रूप सौ चक्षुसे मैं मुनों-
को लखूंगी कृपादृष्टिसे सर्वथा।
ता दिनातैं शताक्षी कहैंगे मुझै
मानवा गावते ही रहेंगे कथा॥ १॥
ता समैं आपने देहसे शाक-
उत्पत्ति ऐसे करूंगी सुनो हे सुरा।
भूमिमें देखियेंगे अकस्मात् ही,
स्वाद जैसे सुधाके उठे अंकुरा॥
खायकै पुष्टता को गहेगी प्रजा,
प्राण धारे रहेगी यथा थी पुरा।

यौं कहेंगे मुझै लोक शाकम्भरी,
दूर दुर्भिक्ष होगा दुरा ही दुरा ॥ २ ॥

कवित्त

ताही समय दुर्ग नामा होयगा असुर,
तिसे करके समाप्त शीघ्र दुर्ग नाम पाऊँगी ।
फेर भयभीति नम्र होके जी जपेंगे मोहि,
देकै वरदान मैं मुनोंको अपनाऊँगो ॥
भीम रूप धारकै निहारकै हिमाचलमें,
ऋषोंके निमित्त राक्षसोंको खाय जाऊँगी ।
ता दिनतैं भैरव रहेंगे मेरे भक्त-
इस कारणतैं भीमा देवी लोकमें कहाऊँगी ॥
यातैं उपरान्त दुर्ग-वंशका असुर एक,
होयगा त्रिलोकको भयंकर निहारूँगी ।
जा मैं षट् षट् पद देखिये असंख्य जैसी,
भ्रमरोंकी सेनामें भ्रमर-रूप धारूँगी ।
धर्मकी न गन्ध फूल्यो किंशुकको घन-वन,
बीजुरीसी दौड़ तिस अरुणको मारूँगी ।
यातैं मेरे भक्त मोको भ्रामरी कहैंगे भ्रम,
भूतलमें जगत्की विपति बिडारूँगी ॥ २ ॥

दोहारा

जब जब बाधा करहिंगे दानव अल्प अनल्प ।
अवतर तिनको हरहुँगी यह मेरो सङ्कल्प ॥

गीतक छन्द ।

थी बुद्धि भैरवनाथमें अम्बाकी जेती दई ।
एकादशी नारायणी स्तुति-कथा पूरण भई ॥
जो पढै याको सुनैं अथवा लिखें और नई,
तापै शिवा सन्तुष्ट हो सुख ऋद्धि सिद्धिमई ।

एकादश अध्याय समाप्त

द्वादश अध्याय

सवैया ।

बोली शिवा मेरे जे जे कहैं स्तव जो इनसे स्तुति मेरी करेगा । जैसे वधे मधुकैटभ औ महिषासुर शुम्भ निशुम्भ ररेगा । दूर करूंगी मैं बाधा जहां लग काहूको काहूके पायँ परेगा । योगीकी योगतैं भोगके भोग विना श्रम सों भवसिन्धु तरेगा ॥

॥ कवित्त ॥

अष्टमी चतुर्दशी या नवमीको एक-चित्त,
भक्तिसे चरित्र जे जे सुनैं या सुनावेंगे ॥
जो जो सब करेंगे सुकृत मन मान लूंगी,
विपत विघन डर धोरे नहीं आवेंगे ॥
देकै ऋद्धि सिद्धि मैं कुलकी करूंगी वृद्धि,
भग जायँगे दरिद्र निश्चिन्त गुण गावेंगे ।
भोगेंगे अभीष्ट अरु इष्टका न होवे वियोग,
यातैं जीवते ही जगमें मुक्तिफल पावेंगे ॥

दो

शत्रु चौर नृप शस्त्र सब, पावक जलके जाल ।
इनका भय उनको नहीं, मैं जिनकी रखवाल ॥ १ ॥

गीतक छन्द ।

इसतैं पवित्र चरित्र मेरा पढ़ेंगे मन लायकै,
अति भक्ति सेती सुनहिंगे ते रहेंगे सुख पायकै ।
उपसर्ग जेते मरीके उत्पात त्रिविध नशायकै,
भव तरहिंगे ये परम शुभ माहात्म्य उत्तम गायकै १
जिस आयतनमें नित्य पाठ चरित्रका परिकाश है,
तिसमें रहैं सुर सम्पदा शुभ ऋद्धि सिद्धि निवास है
तिसको न छोड़ सकूँ कभी सब समय मेरे पास है,

सुखवासको वह भवन मांको दूसरो कैलास है ॥२॥
बलि दान पूजा होम कार्य महोत्सवोंमें नीतिसे,
पढ़कै समस्त चरित्र सुनकै छुटेंगे भवभीतिसे,
विधि जाण अथवा अजाण वजैं विजयके गीतिसे,
तिनका किया परिपूर्ण अर्चन मानलूँगी प्रीतिसे ३
प्रतिवर्ष मेरी महापूजा शरद ऋतुमें हों जहाँ,
अति भक्ति सेती भक्त बैठ चरित्र सर्व सुनै तहाँ।
छुट जाय बाधा जहां लौं ऐसी कृपा करदूं मैंही,
धन धान्य युक्त रहे सदा इसमें कछू संशय नहीं ॥
उत्पत्ति सहित चरित्रमें ये श्रवणसुखको वहहिंगे,
सुनकै पराक्रम समरका नर नित्य निर्भय रहहिंगे ॥
रिपु नष्ट होंगे वृद्धि कुलकी कुशल पूर्वक लहहिंगे।
वर भोग भवके भोग योगीश्वरनिकी गति लहेंगे।

छंद।

नर शान्ति कर्म विषैं सुनै उड़जाय कर्म-लपेट ।
ग्रहदशा पीड़ा दूर हो सन्तुष्ट हो सब खेट ॥
दुःस्वप्न दे सुस्वप्न फल विघ्नाटवीको मेट ।
कर देत श्रवण चरित्रका पद्मालयासूँ भेंट ॥१॥

कवित्त

बालकोंके पूतनादि दोष सब दूर होंगे,
शत्रुवर्ग फूट फूट धाय पाँव गहेंगे ।
दुष्ट दुरवृत्तियों की सेना शीघ्र नष्ट होंगी,
औरकी तौ कहा यमरायकी न सहैंगी ॥
जेते भूत प्रेत औ पिशाच राक्षसोंके कुल,
ह्वाँसे भज जावेंगे जहां चरित्र गहेंगे ।
वक्ता और श्रोता सुख भोगकै महीतलके,
याको परभाव मेरे पास आय रहेंगे ॥ १ ॥
वर्षमें जे एक वार भी मनुष्य आश्विनमें,

विप्रको बुलाय होमके निमित्त वरेंगे ।
अर्घ्य पुष्प फल दल गन्ध पुष्प धूप दीप,
षोडशोपचार मेरे जनमेको करेंगे ॥
ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय तृपताय दैके,
दक्षिणा प्रदक्षिणा भी पाँवनमें परेंगे ।
रोग दोष पाप आप ही से आप दूर होंगे,
सुनकै चरित्र चित्रगुप्तसे न डरेंगे ॥ २ ॥

सवैया

युद्धचरित्रको कीर्तन मर्त्योंकी रक्षा करे ग्रह--भूत--निवारण । दानव दुष्टोंका है वध वर्णन देत अभय पद शत्रु-संहारन । ब्रह्माने ब्रह्मऋषीने तुम्होंने कहे स्तव निर्मल बुद्धिके कारण । भक्तिसे भक्त कहै या सुनै ताके हाथ रहै भवसिन्धुकी तारण ॥

पद्धति —छन्द

वन-विकट पंथ निर्जन दुरन्त
　　जहँ विविध भयङ्कर जीव जन्त ।
चहुँ ओर होय दावाग्नि हेर
　　रिप चौर वर्ग या लेय घेर ॥ १ ॥
गह लिया शत्रुने भया भीत
　　गज सिंह व्याघ्र करकै गृहीत ।
जिसको नरेशने कहा वध्य
　　बँध गया पड़ा हो बन्दि-मध्य ॥ २ ॥
पुन जो समृद्धिकी चढ़ा नाव,
　　वह चला चला परिचण्ड वाव ।
अथवा अशेष शस्त्र–प्रहार,
　　जहँ करत युद्धमें मार मार ॥ ३ ॥
इस भाँति चोर बाधा अपार,
　　नर करै तत्र पीडित पुकार ।

कह तो चरित्र मेरा प्रशस्त,
छुट जाँय शीघ्र संकट समस्त ॥ ४ ॥

सवैया

मेरे प्रभावतै सिंह वृकादिक अश्व-गयन्द छुटे वृषभै से। लोहेकी वाडसी चौरोंकी धाव जहाँ लग शस्त्रोंके सँघट तैसे। युद्धचरित्रके वक्ताको श्रोताको दूरसे देखकै भाजेंगे ऐसे। सूर्यके आगमसे पहिले ही प्रभात तमोगुण के गए जैसे ॥ १ ॥

दोहा

ऋषि बोले श्रीचण्डिका, देकर ये वरदान।
चण्ड--विक्रमा भगवती भई सु--अन्तर-ध्यान ॥

सवैया

देवी अन्तरधान लखा सब शत्रु मरे जे महीको हलावत। देव विजैकी बजायकै दुन्दुभि स्वर्गको पुष्प चले बरसावत। निर्भय जैसे पुरा अधिकारोंपैं जायकै बैठे हैं मोद बढ़ावत। अम्बाके पुण्य-चरित्रको गावत यज्ञोंके भागोंका भोग लगावत। शुम्भ निशुम्भ अमापपराक्रम दारुण देवोंके शत्रु भये हैं। गौओंके दोषी थे द्रोही द्विजों के जिन्होंके प्रतापमें लोक तये है। विश्वकी रक्षाके कारण देवीने युद्धमें जा दिन मार लये हैं। दानव दैत्योंके ता दिनतैं कुल शेष पातालको पैठ गए हैं ॥ २ ॥

छन्द

इस भाँति देवी भगवती नित्या परे से परै।
अवतार वारम्वार धर धर दैत्यकुलको हरै ॥
सुन भूप ऐसे विश्वकी प्रत्यत्त रक्षा करै।
जिसके पवित्र चरित्रसे डर आप डर डर मरै ॥१।
इस विश्वकी वह मोहनी पुन विश्व-माता वही,
सुमुखी वही विज्ञान—दाता अन्नपूर्णा वही।

नृप महाकालवा महाकाली महामारी कही,
इन रूपसे ब्रह्माण्डको सर्वत्र पूर रही ॥ २ ॥

कवित्त

देवी महालक्ष्मी सनातनी अनादि शक्ति कोटों ब्रह्माण्डमण्डलोंको उपजावे है। पालवेको जन्म ही से जननीके मन्दिरमें अदभुत लक्ष्मीकी वृद्धि दरशावे है। नाश करवेको सो अलक्ष्मीको प्रेर देत सच्चिदाल्हादिनी का पार कौन पावे है। गन्ध पुष्प धूप दीप दान से प्रसन्न भई दूध पूत अन्न धन देकै अपनावे है ॥

दोहा

है दाता विज्ञानकी, माता स्तुति सुनलेत।
चतुर्वर्ग फल भक्तके, करहीमें कर देत ॥

छन्द

देवतोंने देवीसे सुन हृदयमें राखी।
यौं सुरथसे सुमेधाने कही वेद शाखी ॥
मुक्ति मुक्ति पावत हैं याके अभिलाखी।
द्वादशीप्रभावकथा भैरवने भाखी ॥

द्वादश अध्याय समाप्त

त्रयोदश अध्याय

त्रिभंगी छन्द

ऋषि बोले उठ इन्द्रादिकने वरनी निगमागम शाखी है।
अति उत्तमता सब गावै हैं नरलोक सभी अभिलाखी है
नृपमें तुभसे उस देवीकी माहात्म्य-कथा यह भाखी है।
जिसके अनुभाव अखण्डितमें नव खण्ड धरा धर राखीहै
वह माया है नारायणकी उन ऐसी विद्या प्रेरी है।
सबको ममतागुणमें गहकै तिहुँ काल फिरै चक्र-फेरी है॥
जिन मोह लिये जग जीव विवेकी भाखत मेरी मेरी है।

नृप तू ये वैश्य पदार्थ कहा तिन सृष्टि रची बहुतेरी है । २।
उसके आधीन जगत्में बेटा पोता और पड़ौता है ।
नृप मुक्ति मुक्ति आराधन तैं दे जिस सुखको नर रोता है
कठ तोता भी तू नाहिं कछू जो जन्म अकारथ खोता है ।
सब काम छांड उस अंबाकी शरणागत क्यों नहीं होता है
बोले मार्कण्डे जैमिनिसे भगवन्त सुनी जब एती ।
ऋषिके मुखसे उस राजाने तब ध्याय चरण मन सेती ॥
उठकै साष्टांग किये अभिवन्दन वैश्य समाधि समेती ।
करुणाकर विप्र दृढ़ व्रत की करकै स्तुति थी मति जेती ४
वरिबश्या कारण काली की उठ चला तपस्या करनेको ।
छुट राज्य गया ममता न छुटी दुःखमें न गणा कछु मरनेको
पहुँचा देवीके द्वार नदीके पुण्य-पुलिनमें परनेको ।
दर्शनको आधा अम्बाने देखा राजाके धरनेको ॥ ५ ॥

दोहा

जैसे राजा तप विषैं, हुआ वैश्य भी आप ।
विधिसे देवी-सूक्तका, लगा करन जप जाप ॥

त्रिभङ्गीछन्द ।

वे सुरथ समाधि पुलिनमें बैठे ये मनमें ठहराई है ।
अम्बा के अर्चन करनेको माटी की मूर्त्ति बनाई है ॥
अङ्गोंमें भूषण वस्त्र अलंकृत चन्द्रकला छबि छाई है ।
मन्दस्मित पूर्वक देखत यों साक्षात् मनो वरदायी है ॥ १ ॥
बैठे देवी के पूजन को सामग्री सब मँगवाई है ।
देके सिंहासन रत्न-मयी करके आह्वान बढ़ाई है ॥
गन्धाक्षत पुष्प सुगन्ध विलेपन दीपक ज्योति जगाई है ।
नित्यप्रति होम विषैनी राजन् तर्पण तैं तृप्ताई है ॥ २ ॥
करकै यम नियम दृढव्रत होकै मनको पकड़ बगाया है ।
निद्रा अरु क्षुधा तृषाको तजकै ध्यान विषयमें आया है
सो नौधा भक्ति भवनके भीतर आदरसे बैठाया है ।

श्रीजगदम्बाके चरण-कमलकी सुश्रूषामें लाया है । ३ ।
देवी देखे तीन वरष लौं नाना द्रव्य चढ़ाये हैं ।
पूजनमें जैजैकार उचारे चामर छत्र ढुलाये हैं ॥
अब दैन लगे बली निज-शोणितकी तप तपकै तन तायेहैं
करकै सर्वस्व मदर्पण ये आत्मार्पण करने आये हैं । ४ ।
लख प्रादुर्भाव भई जगदम्बा श्रीचण्डी सुखमैंसे ।
जिन दारुण दैत्य समाप्त किये सब लोक बचाये भै से ॥
अपने भक्तोंकी दीन दशाको देख सकैं सो कैसे ।
करुणाकरणी शरणागतवत्सल बोल उठी तब ऐसे । ५ ।
वर माँग महीप भला मुझतैं तेरो वाञ्छित जो मन माहीं
कुलनन्द तू अपना भो मनोरथ भाख जपी हुँ यहाँ हीं ॥
भव-सिन्धुके पार उतारत हुँ सब जीवनकी गह बाहीं ।
जिसपै मैं प्रसन्न भई जगमें तिसको, कछु दुर्लभ नाहीं ॥

सवैया

बोले मृकण्डके सूनु महीपने मांग्यो शिवे तेरो भक्त कहाऊँ । छोड़ शरीरको जन्म धरूँ जिस, योनिमें राज्य अखण्डित पाऊँ । शत्रोंको मार समाप्त करूं अबकै अपना घर तो अपनाऊँ । क्षत्रीका पुत्र पराजित हो मुख कौनसे लोकमें जाय दिखाऊँ ॥१॥ वैश्यने मांगा मैं था तो शिवे अपने घरके धन धानसे मण्डित । दुष्ट कुटुम्बने काढ़ दिया तबतैं उनके अतिमोहसे दण्डित । दीजिये ज्ञानको खड्ग मुझै जो करै छिन माहिं ममत्वको खण्डि।ऐसी कृपा कर तीनहूं कालमें ऐसा रहुँ जैसो काशीको पण्डित॥२॥

चौबोला

पहिले देवी राजासों बोली अबसे नाहिं डरेगा ।
हरकै शत्रोंको स्वल्प दिनोंमें पूरण राज्य करेगा ॥
बल विक्रमका यश निर्मल तेरा भूतलसे न टरेगा ।
मरकै तू होगा मनुसावर्णिक रवितैं देह धरेगा ॥ १ ॥

वैश्यवर्य जो मो तैं तेरा वाञ्छित शीघ्र लहेगा ।
ज्ञानखड्ग मैं तोको दीया निर्भय ताहि वहेगा ॥ ॥
जिसका काटा महामोहका सब परिवार ढहेगा ।
जबलों है ब्रह्मांड जगत्में जीवन्मुक्त रहेगा ॥ २ ॥
फिर भी बोले जैमिनिसे ऐसे मार्कण्डेमुनि ज्ञानी ।
तिन सुरथ समाधि परमभक्तोंको यौं कहके मृदुबानी
उनसे अपनी सुनिकै स्तुति तत्क्षण वर देकै मनमानी ।
उस माटीकी ही मूर्ति विषैं भई अन्तर्धान भवानी ।३।
करुणाकरणीसे यों वर लेकै करकै पूरण करणी ।
यह वही सुरथ अब राज करै अपनाय लइ सब धरणी ॥
पुनि क्षत्रिशिरोमणि होकै बैठा श्रीदेवीकी शरणी ।
मरकै सुत होगा सूरजका सो कहिये मनुसावरणी॥४॥

तोटकछन्द ।

त्रयोदशी कही कथा वरप्रदानकी यथा ।
श्रीभैरवेण निर्मिता समस्तग्रन्थपूर्णता ॥

तोमरछन्द ।

हौं अल्प-धी अज्ञान क्षमियों कवीन्द्र सुजान ।
जहँ पाठ होय अशुद्ध तहँ सुधी कीजहु शुद्ध ॥

त्रयोदश अध्याय समाप्त

श्रीमन्मिश्र चेतरामस्यात्मज विप्र भैरवनाथकृतं
चण्डीचरित्रं सम्पूर्णम



श्रीहरिः ।

अथ ग्रन्थादौ ग्रन्थान्ते वा प्रथमं चरित्रोत्पत्त्यर्थं भक्तकुलवर्णनम्

त्रिभङ्गीछन्द ।

इक परमशिवाका भक्त भया है नन्दराम सुखराशी ।
द्विज वत्स गोत्री नाग वाण है शासन वेद विलासी ॥
हरियाणेकी शोभासौं दीसे बास ग्वालको वासी ।
बसकै जिन शास्त्र विनोद विषैं सब करी सपीदम् काशी
नन्दाकर पुत्र पदाथ पुराणै वास रहा इस सेती ।
गङ्गाके सेवनको उठ आया था सहर सपीदम सेती ।
तिरसूपुरे कर बास शिवा सन्तुष्ट करी थी येती ॥
धर ध्यान प्रजाके सब सुखकी कह दे था बात अगेती २
पुन दुर्गादास पदारथको सुत सन्त हुआ अलबेला ।
हठकै सन्तुष्ट करी जगदम्बा ऐसा खेल सुखेला ॥
पर्चे जिन दे दे वहीं लगाया वाराहीका मेला ।
जिसमें अंबाके भक्त करोड़ों हो तब डाढ़ कठेला ॥३॥

सवैया ।

दुर्गाके पुत्र भयो पुन ऐसो सो धर्मके काम करे था लपक्कर । पायसखण्ड घृतल्युत भोजन विप्रोंको नित्य जिमावे था थक्कर । देवीके अर्थ लुटावे था द्रव्य को दीन अनाथ जो आवे था तक कर । अम्बाकी भक्तिसे फक्करकी सब लोकमें कीर्त्ति रही है झमक्कर ॥ १ ॥

दोहा ।

ताके पण्डित पुत्र दो, चेतराम शिवदत्त ।
वाराही तिरशूलपुर, तहां भये उत्पत्त ॥

त्रिभङ्गीछन्द ।

वह चेतराम शिवदत्त सहोदर भक्त भये हैं ऐसे ।
दिन रात शिवाके चिन्तनमें मार्कण्डे जैमिनि तैसे ॥
मिलके निगमागम पढे पितासे मिल पूजामें बैसे ।

वर पाय सकल संशय हरने को नर नारायण जैसे ॥
शिवदत्त रायके उदयकरण जिसकी मति निर्मल पैसी।
पुनि चेतरामके तीन पुत्र हैं बालक भैरव जैसी ॥
सब भक्त शिवाके शीशबसे श्रुति शास्त्र विषैं गति ऐसी।
जिनके वरवाणी वीणापाणी रहै हृदयमें वैसी ॥ २ ॥
ये चारों भ्राता अम्बाके पूजनको उद्यत तन्मैं।
मिल जैसे अन्तःकरण चतुष्टय वैठे एक भवनमें ॥
कर पूजा जैसी राम सुबुद्धी उदयकरणकी मनमें।
बोले श्रीबालक चित्त तिहारा भैरव नित्य भजनमें॥३॥
हे भैरव भैरव कूक उठे धर ध्यान सुनो कर काना।
सुत सन्त शिरोमणि, चेतरामके भ्रातृ हमारे प्राना ॥
सोरमके वासी परम भक्त हरदत्त हमारे नाना।
हमको करवावो श्रीदेवीके चरित कथामृत पाना ॥ ४ ॥
इसमें इतना अभिलाष हमारा सबके मनकी पावो।
जितने अपने कुलके श्रीबालक बालक पास बिठावो ॥
हम श्रोता हैं तुम वक्ता हो नरभाषामें समझावो।
दुर्गाके अर्थ समस्त शिशोंको भाव हृदैमें ल्यावो ॥ ५ ॥

दोहा

भ्राताके अभिलाषतैं भैरवने धर ध्यान।
करी प्रसन्न सरस्वती पायो ये वरदान ॥

कवित्त

सिद्धि-बुद्धि-दाता श्रीगणेशजीका ध्यान धर।
भैरव हृदै में हो मनुष्यवाणी बोलूंगी ॥
भ्राता जैश्रीरामजीका कीजै अभिलाष पूर्ण।
दुर्गाके समस्त अर्थ भिन्न २. खोलूंगी ॥
बालोंको दिखाऊँ भाव रुचि उपजाऊँ।
अनुसार सुरभाषा ही के भक्तिरस घोलूंगी ॥
चांडिकाचरित्रके कथामृत—प्रवाहसे,
पवित्र होयवेको पुत्र साथ २ होलूंगी ॥

छन्द

यह भक्तकुल वर्णन किया, वरदान अम्बाने दिया ।
धनधान्यसम्पति वृद्धि हो, मम भक्त लोकप्रसिद्ध हो

छन्द

संवत् विक्रम ठारहसोबावन ज्येष्ठ सुदी दशमी गुरु पावन।
थी भैरवनाथकी बुद्धि यथा, कह्यो चंडिचरित्रविचित्रकथा॥

सोरठा

भैरव कियो प्रणाम, श्रीगुरु गणपति गिराको ।
सकल लोक अभिराम, वरद कह्यो चंडीचरित्र ॥

छन्द

चंडीचरित्र महिमा अपार, ब्रह्मादि देव नहिं लहैं पार ।
जे पढ़ैं सुनैं नर होयँ वृद्ध, धन धान्य संपदा अखिलसिद्ध

भक्तकुलवर्णन समाप्त

छप्पय छन्द

जब लग मेरु सुमेरु रहो धरती घन अम्बर ।
जब लग शेष महेश रहो सुख पूर विश्वम्भर ॥
सूरज चन्द्र प्रकाश रहो जग ज्योति भवानी ।
गंग जमुन जब लग्ग रहो कविजनकी वानी ॥
जबलग ध्रुव आकाश थिर तबलग वरदायक सफल ।
भैरवकृत चंडीचरित रहो सदा युग युग अचल ॥

कविके स्वर्गवासका समय

ठारहसे उणहत्तरा, हरिद्वारके तीर ।
श्रावण मावस शुक्र दिन, भैरव तज्यो शरीर ॥

चण्डीचरित्र समाप्त.

—०—

ਮੈਂਬਰ ਦਾ ਖਾਤਾ/ਕਾਰਡ

.... 2. ਪਿੰਡ .... 3. ਬਲ

....
ਅਤੇ 7.

ਦੀ ਮਲਕੀਅਤ

....

ਵਾਲੀ .... 8.

....

ਵਾਲੀ .... 10.

....

ਗੀ/ਯੋਜਨਾ ਲੇਖਾ

....

ਇਗੀ ਰੁ: ....

....

ਗਲਬਾਤ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਵਰਨਣ, ਐਕੜਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਬਾਰੇ ਗਲਬਾਤ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਸੰਪਤੀ ਦੀ ਹਾਲਤ ।